तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-8, अंक - 11, अक्टूबर 2020, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

प्रतिभा का जब हो सम्मान तो हौसले क्यों न भरें उड़ान

ईश-वन्दना

प्रभु ध्यान में आओ, दिल में समाओ।
मन का मिटे अँधेरा, ऐसी जोत तुम जलाओ।

हम शरण हैं तुम्हारी, विनती सुनो हमारी।
हमें ज्ञान ऐसा दे दो, जिसे देखे दुनिया सारी।
अपनी कृपा से हमको, नयी राहें तुम दिखाओ।
मन का मिटे अँधेरा, ऐसी जोत तुम जलाओ।
प्रभु ध्यान में आओ, दिल में मेरे समाओ।
मन का मिटे अँधेरा ऐसी जोत तुम जलाओ।

इन्सानियत से अपने, जीवन को यूँ सजाएँ।
जीतें सभी के दिल को, चाही दिशा में जाएँ।
अन्याय से लड़ें हम, हिम्मत हमें सिखाओ।
मन का मिटे अँधेरा, ऐसी जोत तुम जलाओ।
प्रभु ध्यान में आओ, दिल में मेरे समाओ।
मन का मिटे अँधेरा, ऐसी जोत तुम जलाओ।

माता-पिता के सपने, हम पूरे कर दिखाएँ।
गुरुओं से पाएँ जो शिक्षा, उस पर ही चलते जाएँ।
करें हम सदा भलाई, ऐसा हमें बनाओ।
मन का मिटे अँधेरा ऐसी जोत तुम जलाओ।
प्रभु ध्यान में आओ, दिल में मेरे समाओ।
मन का मिटे अँधेरा, ऐसी जोत तुम जलाओ।

संजीव शर्मा
हिंदी अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खटौली, जिला- पंचकूला

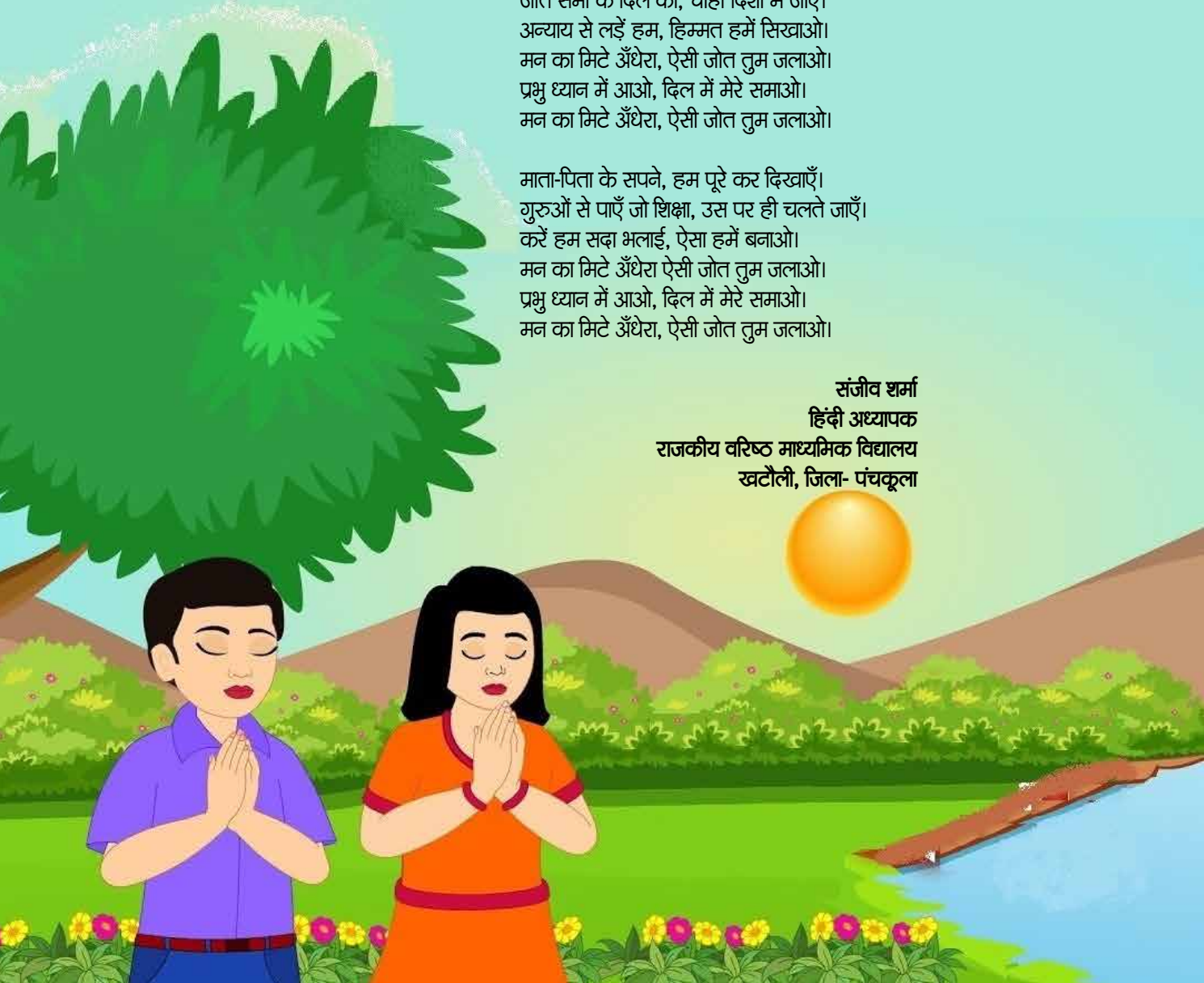

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अक्टूबर 2020

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. रजनीश गर्ग
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"कोई शिक्षक दूसरों को तभी शिक्षा प्रदान कर सकता है जब वह स्वयं भी शिक्षा ग्रहण कर रहा हो। कोई दीपक दूसरे दीपक को तभी प्रज्वलित कर सकता है जब वह स्वयं भी प्रज्वलित हो।"
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

» सुपर-100 कार्यक्रम को दिया जायेगा विस्तार : मुख्यमंत्री 5
» सुपर 100 : सपनों की उड़ान का है दूसरा नाम 6
» 'नीट' परीक्षा में भी 'सुपर-100' का करिश्मा 12
» बेहद साधारण परिवारों से हैं सुपर-100 के सितारे 14
» इतिहास रच रहा है विद्यालय शिक्षा विभाग 17
» वार्षिक अलंकरण समारोह में मेधावियों का हुआ सम्मान 18
» शैक्षिक फलक पर रचनात्मकता के सितारे टाँकते शिक्षक 20
» शिक्षा के क्षेत्र में डुडीवाला किशनपुरा गाँव की प्रेरणादायक पहल 22
» विद्यालय भवन से राष्ट्रपति भवन तक का सफ़र 24
» कोरोना काल में चमकी शिवम की कला . . . 25
» खेल-खेल में विज्ञान 26
» बाल सारथी 28
» नारी शक्ति सँजोए है पीढ़ी दर पीढ़ी की जानकारी 30
» School choice in rural India: Perception versus reality 32
» No Child Left Out 36
» Stay Motivated and Positive during the Corona.... 38
» Compendium of Academic Courses After +2 40
» The Blue Blood River 43
» Vocabulary Enrichment Activities 47
» Amazing Facts 48
» General Quiz 49
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

गढ़े जा रहे नित नये कीर्तिमान

विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। लगातार सुधरते परीक्षा परिणाम सफलता की गौरव-गाथा के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। 2015 में बारहवीं कक्षा में सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की पास-प्रतिशतता जो लगभग 52 प्रतिशत थी, वह 2016 में 62, 2017 में 65, 2019 में 74 और 2020 में 80 प्रतिशत हो गई है। लगातार सुधरते परीक्षा-परिणाम इसी ओर संकेत करते हैं कि सतत चल रही सुधारात्मक प्रक्रिया अब सुखद परिणाम देने लगी है।

कोरोना काल में भी विद्यालयों के बंद होने पर विद्यालय शिक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री महोदय के 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' को जिस सफलता से चलाया, उसकी राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हो रही है। नई शिक्षा नीति में हरियाणा में पहले से ही चल रहे 'बैगलैस डे, मंथली एसेस्मैंट टैस्ट, स्किल पासबुक और क्विज़ क्लब' को सम्मिलित किया गया है, जो इस बात का प्रमाण है कि प्रदेश में चल रहे शिक्षा के प्रभावी सुधारात्मक कार्यक्रम अब राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना रहे हैं। 'सुपर-100' के विद्यार्थियों ने हाल ही में ही कमाल का प्रदर्शन किया है। राजकीय विद्यालयों में पढ़ रहे 25 विद्यार्थियों ने जेईई एडवांस परीक्षा से आईआईटी में स्थान बनाकर और 72 विद्यार्थियों ने नीट परीक्षा क्वालिफाई करके इस ओर इंगित किया है कि अगर उन्हें अवसर मिले तो वे भी किसी से कम नहीं हैं। पत्रिका का प्रस्तुत अंक 'सुपर-100' नामक महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम पर ही केंद्रित किया गया है।

आपकी चहेती 'शिक्षा सारथी' का प्रस्तुत ऑनलाइन ही आप तक पहुँचेगा। शीघ्र ही स्थितियाँ सामान्य होने पर पूर्व की भाँति प्रकाशन भी आरंभ किया जाएगा।

-संपादक

सुपर-100 कार्यक्रम को दिया जायेगा विस्तार : मुख्यमंत्री

खोले जायेंगे दो नए कोचिंग सेंटर, उच्च शिक्षा के लिए दिया जायेगा कोलैटरल-फ्री लोन

राज्य सरकार के सुपर-100 कार्यक्रम, जिसके तहत इस साल हरियाणा के 25 छात्रों को आईआईटी में प्रवेश मिला है, की सफलता को देखते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बीते दिनों सुपर-100 कार्यक्रम के तहत कोचिंग सेंटरों की संख्या दो से बढ़ाकर चार करने की घोषणा की है। वर्तमान में हरियाणा के पंचकूला और रेवाड़ी में दो कोचिंग सेंटर चल रहे हैं। मुख्यमंत्री ने राज्य में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए कोलैटरल-फ्री लोन की सुविधा प्रदान करने की भी घोषणा की ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पैसों की कमी के कारण छात्रों की शिक्षा पर कोई प्रभाव न पड़े। मुख्यमंत्री बीते दिनों हरियाणा निवास, चंडीगढ़ में आयोजित एक कार्यक्रम में आईआईटियंस को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री कँवर पाल भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बैंकों के माध्यम से कोलैटरल-फ्री लोन प्राप्त करने के लिए छात्र को हरियाणा का मूल निवासी होना जरूरी है और वह देश में कहीं भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ विदेशों में भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का लाभ उठा सकता है। उन्होंने कहा कि छात्र या उसके परिवार पर लोन का बोझ न पड़े, इसके लिए राज्य सरकार ऋण के लिए गारंटी देगी। हालांकि छात्र द्वारा शिक्षा पूरी करने और रोजगार प्राप्त करने के बाद ऋण की अदायगी किश्तों में की जाएगी। देश के प्रमुख संस्थानों में से एक, आईआईटी में प्रवेश पाने वाले छात्रों को बधाई देते हुए मुख्यमंत्री ने छात्रों से समाज, प्रदेश व देश की प्रगति के लिए कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इनकी सफलता अन्य छात्रों को भी जीवन में बेहतर प्रदर्शन करने और सफलता हासिल करने के लिए प्रेरित करेगी।

उन्होंने कहा कि सुपर-100 कार्यक्रम वर्ष 2018 में शुरू किया गया था, जिसके तहत रेवाड़ी और पंचकूला में केंद्र स्थापित किए गए थे। आईआईटी जैसे प्रमुख संस्थानों में प्रवेश पाने के लिए सरकारी स्कूलों के साधारण परिवारों के मेधावी छात्रों को इन केंद्रों में कोचिंग दी जाती है। सरकारी स्कूल के छात्र जो कक्षा 10वीं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करते हैं, उन्हें लिखित परीक्षा और विशेष स्क्रीनिंग प्रक्रिया से गुजरने के बाद जेईई और नीट परीक्षा के लिए विशेष कोचिंग दी जाती है। छात्रों के छात्रावास, भोजन और स्टेशनरी का खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में शिक्षा के लिए माहौल तैयार किया है। छात्रों को न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है, बल्कि उन्हें विशेष कोचिंग भी दी जा रही है ताकि वे देश के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में प्रवेश ले सकें।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति-2020 में विभिन्न नए सुधारों को शामिल किया गया है जो छात्रों के हित में है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में छात्रों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में बाधा उत्पन्न करने वाली सभी अड़चनों को दूर कर दिया गया है।

इस अवसर पर शिक्षा मंत्री कँवर पाल ने कहा कि यह राज्य के लिए गर्व की बात है कि इस वर्ष हरियाणा के 25 छात्रों को आईआईटी में प्रवेश मिला है। उन्होंने कहा कि उनकी उपलब्धि राज्य के अन्य छात्रों को भी नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगी। उन्होंने सुपर-100 कार्यक्रम के तहत कोचिंग सेंटरों की संख्या दो से बढ़ाकर चार करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

-शिक्षासारथी डेस्क

सुपर 100 : सपनों की उड़ान का हैं दूसरा नाम

23 विद्यार्थियों ने एडवांस परीक्षा और 72 ने नीट परीक्षा क्वालिफाई कर बनाया इतिहास

अजय चौहान

21वीं सदी ने हमें अनेक ऐसी सुविधाएँ दी हैं (विशेषकर मोबाइल तकनीक में 3जी और 4जी आने के बाद) जिनकी कल्पना पिछली सदी में किसी ने भी नहीं की होगी। सूचना तकनीकी जहाँ हमारे जीवन को सरल बना रही है वहीं रोजगार के अवसर भी पैदा कर रही है। गुरुग्राम को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में आईटी सैक्टर की मुख्य भूमिका है। देश भर के इंजीनियर यहाँ आकर लाखों रुपये मासिक वेतन ग्रहण कर रहे हैं। देखने वाली बात यह है कि इसमें हरियाणा के पिछड़े व ग्रामीण क्षेत्र की कितनी हिस्सेदारी है। प्रदेश में आज भी ग्रामीण क्षेत्र में बारहवीं कक्षा अथवा ग्रेजुएट होने के बाद सरकारी नौकरी का आकर्षण पूरे उफान पर है। रोडवेज में कंडक्टर, सरकारी गाड़ी के ड्राइवर, पटवारी, हरियाणा पुलिस में सिपाही अथवा सरकारी क्लर्क बनना आज भी आकर्षण का बिन्दु है। अगर गहराई से देखें तो प्रदेश में दो प्रकार की शिक्षा है- एक वर्ग अपने बच्चों को गैर सरकारी विद्यालयों में मोटी फीस देकर पढ़ाता है। फिर कोचिंग सैंटर के मोटे खर्चीले पैकेज लेकर जेईई अथवा एनईईटी की तैयारी करवाता है। अगर अच्छे कॉलेज में सीट नहीं मिलती तो मोटी रकम देकर प्राइवेट कॉलेज में बीटेक अथवा मेडिकल की शिक्षा दिलाता है। 12वीं कक्षा में अच्छे अंक लेने वाले बच्चों को दिल्ली अथवा चण्डीगढ़ के कॉलेजों में दाखिला दिलवाता है और बच्चे ग्रेजुएट होने के साथ-साथ विभिन्न

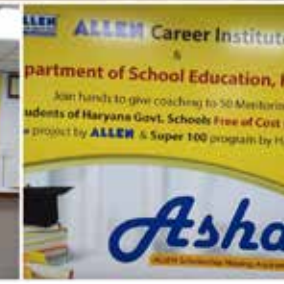

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं और कुछ संघर्ष के बाद कुछ प्रतिशत बच्चे अपना करियर बनाने में सफल हो जाते हैं या फिर बीएड या डीएड करके अध्यापक सेवा में आ जाते हैं।

दूसरे वर्ग की बात करें तो सरकारी विद्यालयों से अच्छे अंक लेकर हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी से बारहवीं पास करते हैं (यहाँ से 75 प्रतिशत अंक लेकर पास होना सीबीएसई के 100 प्रतिशत अंक से बेहतर है) और सरकारी कॉलेज से ग्रेजुएट होते हैं अथवा डीएड जैसे कोर्स का रुख करते हैं और फिर लग जाते हैं लाइन में

सरकारी आवेदकों के साथ, उस भीड़ को बड़ा करने में जो बस क्लर्क, पटवारी, कंडक्टर, ड्राइवर आदि की नौकरी के आकर्षण में फँसी हुई है।

अब करें भी तो क्या,क्योंकि हरियाणा बोर्ड के स्कूलों में (सरकारी हो या प्राइवेट) पढ़ने वाले विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों ने जेईई अथवा एनईईटी आदि के माध्यम से उच्च शिक्षा ग्रहण करने करवाने का सपना देखना बन्द कर दिया है तथा इसमें हिन्दी माध्यम की पढ़ाई तथा कोचिंग केन्द्रों की महँगी फीस ने बहुत बड़ी बाधा का काम किया है। कुछ उत्साही बच्चों ने अगर प्रयास भी किए हैं तो वर्ष दर वर्ष इन प्रतियोगी परीक्षाओं की बारीक होती छननी ने बच्चों को छानना बन्द कर दिया है और आज यह व्यवस्था जगजाहिर है कि किसी भी विद्यालय से बारहवीं पास करने वाला विद्यार्थी बिना प्रोफैशनल कोच अथवा कोचिंग केन्द्र के एनईईटी और जेईई की परीक्षा पास नहीं कर पाता। अक्सर सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के परिणामों की जब तुलना होती है तो क्या कभी किसी ने देखा कि बिना कोचिंग के क्या किसी बड़े और महँगे फाइव स्टार स्कूल के विद्यार्थी इन परीक्षाओं को पास कर पाए हों। हाल के वर्षों में तो कोई दिखाई नहीं देता।

आज सरकारी विद्यालयों पर परफॉरमेन्स का बड़ा

यह अपार हर्ष का विषय है कि सुपर-100 कार्यक्रम के 23 विद्यार्थियों ने देश की सबसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग परीक्षा में उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। सुपर-100 राज्य के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए प्रदेश सरकार की एक अभिनव पहल है। कई बार देखा जाता है कि आर्थिक अभावों के कारण प्रतिभाएँ दम तोड़ देती हैं। सुपर-100 कार्यक्रम साधारण परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। अभी तक पंचकूला और रेवाड़ी में दो कोचिंग सैंटर थे। अब इन सैंटरों की संख्या चार की जाएगी। मैं इन सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

-मनोहर लाल
मुख्यमंत्री हरियाणा

सुपर-100 कार्यक्रम साधारण परिवारों के मेधावी बच्चों के जीवन में एक नया प्रकाश लेकर आया है। इनमें से बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने कभी सपना भी नहीं लिया होगा कि वे आईआईटी में या अच्छे मैडिकल संस्थान में प्रवेश लेंगे। राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने एक बार फिर से सिद्ध करके दिखाया है कि अगर उन्हें उचित अवसर मिलें, तो वे भी किसी से कम नहीं हैं। मैं विद्यार्थियों के साथ-साथ विद्यालय शिक्षा विभाग को भी बधाई देता हूँ। अबकी बार इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों की संख्या को बढ़ाया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इस कार्यक्रम से लाभान्वित हो सकें।

-कँवरपाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

जेईई-2020 एडवांस तथा नीट परीक्षा में सुपर-100 के विद्यार्थियों ने कमाल का प्रदर्शन किया है। वास्तव में विद्यालय शिक्षा विभाग के द्वारा एक इतिहास रचा गया है। राजकीय विद्यालयों के इन चमकते सितारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। इस कार्यक्रम के जो भी मशाल वाहक बने हैं उन सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। विशेष रूप से विकल्प फाउंडेशन रेवाड़ी के नवीन मिश्रा, एस ट्यूटोरियल्स पंचकूला की मीना गुप्ता और मुख्यालय में शैक्षणिक प्रकोष्ठ के नंदकिशोर वर्मा, प्रमोद कुमार तथा मुख्यालय की टीम ने सचमुच सुपर-100 कार्यक्रम को सफल बनाने में भरपूर योगदान दिया है। साथ ही मैं इन विद्यार्थियों व इनके माता-पिता को भी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

-महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

भारी दबाव है। समाज और सरकार दोनों का दबाव है कि स्कूल अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें। ऐसे में अनेक नवाचार करने आरम्भ हुए हैं जिनमें कक्षा नौवीं से गणित और विज्ञान को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाना, कक्षा दसवीं उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को एनईईटी और जेईई की परीक्षा के लिए तैयार करना आदि। इसी कड़ी में विद्यालय शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों ने यह अनुभव किया कि सरकारी विद्यालयों, उनके अध्यापकों तथा नीति बनाने वालों में समय के अनुरूप बदलाव लाना होगा। समय की माँग है कि विद्यालयों में भी अच्छे परिणामों में निरन्तरता बनाई जाए। कुछ सक्सेस स्टोरी हो जो समाज को यह बताने और समझाने में सफल हों कि अगर एक जैसी सुविधाएँ दी जाएँ तो सरकारी स्कूल और इनके विद्यार्थी कहीं भी मुकाबले में पिछड़े नहीं हैं। इसी अवधारणा पर कार्य करते हुए सुपर-100 कार्यक्रम को आरम्भ किया गया। दरअसल इस कार्यक्रम का उद्देश्य अन्त्योदय के सपने को साकार करना है। सरकार का उद्देश्य अन्तिम व्यक्ति के सशक्तीकरण के लिए प्रयास करना है। यह योजना भी उसी सन्दर्भ में बनाई गई। राज्य के सरकारी विद्यालयों में मैरिट लेकर अथवा 75 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर भी विद्यार्थी कोचिंग सैंटरों की मोटी फीस न भर पाने के कारण प्रतियोगिता में पिछड़ जाते हैं और देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह जाते हैं। अनेक विद्यार्थी ऐसे भी हैं जिन्हें प्रशिक्षण के साधन उपलब्ध हो गए हैं तो उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन करके सफलता भी प्राप्त की है। इन्हीं धारणाओं को ध्यान में रखते हुए यह योजना बनाई गई ताकि प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे मेधावी विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठाकर हॉस्टल में रहकर व उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने सपने साकार कर सकें।

क्या है सुपर-100 कार्यक्रम?

विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा सरकारी विद्यालयों में उत्कृष्ट परिणाम लाने वाले विद्यार्थियों के लिए हरियाणा सरकार की अति महत्त्वाकांक्षी योजना है सुपर-100, जिसका बीजारोपण वर्ष 2018 में राजकीय विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे मेधावी विद्यार्थियों को आईआईटी / जेईई तथा एनईईटी जैसी परीक्षाओं की तैयारी निःशुल्क करवाने हेतु किया गया। ऐसे विद्यार्थी, जो इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने के मधुर सपने अपने मन में संजोए हुए तो थे परन्तु खराब आर्थिक पारिवारिक परिस्थितियाँ इन सपनों को साकार करने में आड़े आ रही थी। इन्हीं मेधावी विद्यार्थियों के सपनों को उड़ान देने के लिए हरियाणा सरकार ने सुपर-100 नामक कार्यक्रम को आरंभ किया। जिससे प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे मेधावी विद्यार्थी इस अवसर का लाभ ले सकें तथा शिक्षा विभाग द्वारा उपलब्ध करवाए गए प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटरों पर पूरी एकाग्रता व निष्ठा से उत्तम शिक्षकों के सान्निध्य में अपने आपको कुंदन-सा चमका सकें, अपने सपनों को साकार करते हुए देश के विकास में महती भूमिका अदा कर सकें।

यह योजना सुपर-30 की तर्ज पर तैयार हुई। राज्य के सरकारी विद्यालयों में दसवीं की बोर्ड परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को जेईई, नीट की तैयारी निःशुल्क करवाने की व्यवस्था की गई। रेवाड़ी में विकल्प फाउंडेशन तथा पंचकूला में एस

ट्यूटोरियल चण्डीगढ़ के साथ मिलकर चलाए गये इस कार्यक्रम में विभाग द्वारा जुलाई, 2018 में इन बच्चों का जिला स्तर पर एक टैस्ट आयोजित किया गया। इस टैस्ट में सफल 550 विद्यार्थियों को रेवाड़ी में विकल्प केन्द्र में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया तथा उसके बाद दोबारा एक टैस्ट लिया गया। अंत में कक्षा दसवीं के अंकों, जिला स्तरीय टैस्ट के अंकों तथा पाँच दिवसीय प्रशिक्षण उपरान्त टैस्ट के अंकों की साँझी मैरिट तैयार की गई तथा अंत में 99 विद्यार्थी मेडिकल तथा 102 विद्यार्थी नॉन मेडिकल के प्रशिक्षण के लिए चुने गए। इन चुने हुए विद्यार्थियों को डाइट हुसैनपुर रेवाड़ी के हॉस्टल तथा डाइट पंचकूला के हॉस्टल में रखा गया। विकल्प फाउंडेशन तथा एस ट्यूटोरियल द्वारा इनकी कोचिंग का प्रबन्ध किया गया। गौरतलब है कि विकल्प फाउंडेशन

द्वारा पहले ही इस क्षेत्र में जिला प्रशासन रेवाड़ी के साथ मिलकर कार्य करते हुए वर्ष 2015 में निःशुल्क कोचिंग के द्वारा 18 में से 15 बच्चों का आईआईटी में दाखिला करवाया तथा इस फाऊंडेशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया गया है। एस ट्यूटोरियल चण्डीगढ़ द्वारा भी कोचिंग के क्षेत्र में सफलताएँ अर्जित की गई हैं। विभाग के साथ हुए समझौते के अनुसार दोनों संस्थाओं द्वारा सभी प्रशिक्षकों का प्रबन्ध किया गया, विभिन्न टैस्ट सीरिज का आयोजन किया गया

और दो वर्षों में जेईई, नीट की तैयारी करवाई गई। संस्था को विभाग द्वारा कोई वित्तीय लाभ नहीं दिया गया, यह प्रशिक्षण संस्था द्वारा विद्यार्थियों को निःशुल्क उपलब्ध करवाया गया। दस जमा दो तथा बोर्ड परीक्षा के लिए रेवाड़ी तथा पंचकूला के राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को तैयारी करवाई गई।

इस कार्यक्रम के लिए तत्कालीन निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री राजीव रतन और तत्कालीन निदेशक मौलिक शिक्षा श्री राज नारायण कौशिक बहुत उत्साहित थे। उन्होंने महसूस किया कि वर्षों से शिक्षकों में एक टीस थी कि राजकीय स्कूलों के विद्यार्थियों का बड़ी-बड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन नगण्य रहता है, जबकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में गजब की प्रतिभा है। सरकारी स्कूल आज किसी भी क्षेत्र में निजी स्कूलों से पीछे नहीं रहे हैं। तब अधिकारियों के साथ मिलकर इस योजना की रूपरेखा तैयार की गई और अमली जामा पहनाया गया। हाँ, लीक से हटकर चलने में अनेक बाधाएँ आना स्वाभाविक है। तत्कालीन अधिकारियों द्वारा बड़ी ही कुशलता से उन बाधाओं को दूर किया गया। प्रारम्भ में बहुत से बुद्धिजीवियों ने इसे व्यर्थ का प्रयास करार दिया और कहा कि यह योजना महज रेत में से पानी निकालने जैसी है। आज वही इस योजना की सफलता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते नहीं थकते।

नहीं लिया जाता कोई शुल्क-

विद्यार्थियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। उनके हॉस्टल, खाने-पीने, स्टेशनरी, टांसपोर्ट, मॉक टैस्ट आदि का सारा खर्च सरकार द्वारा वहन किया जाता है। विकल्प

कम नहीं थीं चुनौतियाँ भी

सफलता संघर्ष की कोख से जन्म लेती है। सुपर-100 की सफलता की कहानी के पीछे भी चुनौतियाँ कम नहीं रहीं। जिन दिनों रेवाड़ी की डाइट हुसैनपुर को सुपर-100 के छात्रावासीय केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा था, उन दिनों यह स्पष्ट दिख रहा था कि संस्थान में आवश्यक सुविधाओं का अभाव है। दरअसल वहाँ छात्रावास जैसा कुछ था ही नहीं। यहाँ पेयजल, विद्युत, सीवरेज आदि मूलभूत जरूरतें भी पूरी नहीं हो पा रही थीं। आरंभ के दो महीने तो यहाँ महिला वार्डन भी नहीं थी, इस कारण रेवाड़ी जिले की महिला शिक्षकों को रोस्टर प्रणाली से डाइट स्टाफ के संरक्षण में रात्रि प्रवास की कठिन ड्यूटी निभानी पड़ी। विद्यार्थियों की, विशेष तौर पर छात्राओं की तबीयत खराब होने की दशा में, इन महिला शिक्षकों के संरक्षण में अनेक बार दिन या रात्रि के समय प्रभारी प्राचार्य डॉ वीर सिंह यादव द्वारा 10-12 बार अपने साधनों से जिला मुख्यालय स्थित अस्पताल में ले जाया गया। डाइट का समूचा स्टाफ चार समितियों के माध्यम से दिन-रात इस संचालन कार्य में समर्पित भाव से लगा दिखाई दिया। पहली बार घर से बाहर निकले विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक तौर पर मूल लक्ष्य पर केंद्रित रखना भी किसी चुनौती से कम न था, किंतु समुचित प्रबंधन व शिक्षण कार्य में लगी ड्रीम-टीम ने इन सभी चुनौतियों का कुशलता से सामना किया और पार पाया। उसी का परिणाम है यह सफलता का करिश्मा...

-सत्यवीर नाहड़िया

	विकल्प फाउंडेशन		एस ट्युटोरियल		एलन कैरियर इंस्टिट्यूट		कुल		
वर्ष	मेडिकल	नॉन मेडिकल	मेडिकल	नॉन मेडिकल	मेडिकल	नॉन मेडिकल	मेडिकल	नॉन मेडिकल	कुल विद्यार्थी
2018-20	51	49	48	53	0	0	99	102	201
2019-21	44	57	38	35	21	24	103	116	219

क्या कहते हैं जेईई एडवांस में सफल रहे विद्यार्थी-

दसवीं करते समय आईआईटी का नाम भी नहीं सुना था। शिक्षा विभाग ने खूब तैयारी कराई। रोजाना छह घंटे कक्षा लगती थी, सेल्फस्टडी सहित दिन में बारह घंटे पढ़ाई की। न फोन था, न टीवी। मनोरंजन के लिए बैडमिंटन, क्रिकेट खेलते थे। अब इंजीनियर बनकर देश की सेवा करना चाहता हूँ।

-प्रवीन सिरसा

मैं एक किसान की पुत्री हूँ। दसवीं करते समय कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं आईआईटी में प्रवेश ले पाऊँगी। रोजाना 13 घंटे पढ़ाई की। लॉकडाउन में ऑनलाइन पढ़ाई की। अध्यापकों ने बहुत मेहनत कराई है। मैं विभाग को धन्यवाद देना चाहती हूँ।

-काजल, फतेहाबाद

दसवीं में 90 प्रतिशत अंक आए थे। आईआईटी की तैयारी के लिए रोजाना छह से आठ घंटे कक्षा लगती थी, रोजाना 14 से 15 घंटे पढ़ते थे। वॉलीबॉल खेलते थे, कोरोना काल में मोबाइल पर ऑनलाइन स्टडी की। पापा किसान हैं। अब लगता है ज़िंदगी बदल जाएगी।

-राहुल, जींद

फाउंडेशन, ऐस ट्युटोरियल तथा एलन कैरियर इंस्टिट्यूट द्वारा भी निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

किया जा रहा है सर्वांगीण विकास-

सत्र 2018-20 में राज्यस्तरीय परीक्षा से चुने 201 विद्यार्थियों ने रेवाड़ी तथा पंचकूला में कोचिंग ग्रहण की। इन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा आईआईटी / जेईई एवं एनईईटी की परीक्षाओं में बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए इस योजना पर निम्नानुसार कार्य किया गया-

1. अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहने के लिए इन सभी विद्यार्थियों की दिनचर्या योग एवं अन्य विभिन्न शारीरिक व्यायामों से आरम्भ की जाती है। इनके साथ-साथ सभी विद्यार्थियों को प्रतिदिन पौष्टिक आहार उपलब्ध करवाया जाता है।
2. बदलते हुए परिवेश में विद्यार्थी स्वयं को ढाल सकें एवं करके सीखो (लर्निंग बॉय डूइंग) पर आधारित शिक्षा के सिद्धांत के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सकें। इसके लिए विद्यार्थियों को साइंस सिटी कपूरथला, गोल्डन टैम्पल अमृतसर तथा वाघा बार्डर अमृतसर आदि स्थानों का शैक्षणिक भ्रमण करवाया जाता है ताकि ये सभी विद्यार्थी भ्रमण के अनुभव के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त कर सकें।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बन्धित हर तरह की पठन-पाठन सामग्री विभाग द्वारा विद्यार्थियों को निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाती है।
4. उपलब्ध करवाई गई पठन-पाठन सामग्री को समय-समय पर अद्यतन (अपडेट) किया जाता है ताकि सुपर-100 के विद्यार्थी, प्रतिष्ठित संस्थानों में कोचिंग ले रहे विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार से कमतर न रहें।

दिखने लगे हैं सकारात्मक परिणाम-

वर्ष 2018 में सुपर-100 कार्यक्रम नाम के इस पौधे को वट वृक्ष में परिणत करने के उद्देश्य से तत्कालीन महानिदेशक द्वारा विकल्प फाऊंडेशन, रेवाड़ी तथा एस ट्यूटोरियल, चण्डीगढ़ के साथ-साथ एलन इंस्टीटयूट, पंचकूला के साथ भी एमओयू किया गया जिसके परिणामस्वरूप सत्र 2019-21 के 50 विद्यार्थियों को एलेन जैसे प्रतिष्ठत कोचिंग संस्थानों से कोचिंग दी जा रही है। विभाग द्वारा किए गए अथक प्रयासों एवं विद्यार्थियों द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए की गई निष्ठापूर्वक कड़ी मेहनत के परिणामस्वरूप जेईई (मेन)-2020 की परीक्षा में शानदार परिणाम देखने को मिले। जिससे पूरा शिक्षा जगत गद्गद है। सुपर-100 में से कुल 72 विद्यार्थी क्वालिफाइड हुए, जिनमें से दो विद्यार्थियों ने 99 से अधिक परसेंटाइल स्कोर अर्जित किया था जोकि एक शानदार उपलब्धि रही। सात विद्यार्थियों का 98 से 99 परसेंटाइल, 12का 95 से 98 परसेंटाइल स्कोर तथा 20 का 90 से 95 के बीच परसेंटाइल स्कोर रहा।

भविष्य में भी इस प्रकार की आशा की जाती है कि उपर्युक्त परिणाम से, आगामी वर्षों में इस कार्यक्रम के अंतर्गत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के हौसले को उड़ान मिलेगी और राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी छाप छोड़कर नए आयाम स्थापित करेंगे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विभाग में कार्यरत कार्यक्रम अधिकारी संजय कुमार व अजय कुमार समय-समय पर इस कार्यक्रम का पर्यवेक्षण कर, विद्यार्थियों के सामने आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे।

वर्ष 2020-22 के लिए विभाग अपनी योजना पर कार्य कर रहा है। इन विद्यार्थियों के परिणाम हालांकि बहुत ही उत्साहवर्धक हैं, परन्तु कोविड-19 की त्रासदी ने इस परिणाम को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। मार्च के अन्तिम सप्ताह में जब तैयारी जोरों से चल रही थी, उसी समय हॉस्टल बन्द हो गये और विद्यार्थियों को घर लौटना पड़ा जिसके कारण उन्हें ऑनलाइन माध्यम से समन्वय बनाने में एक मास से अधिक का समय लगा। चूँकि इन विद्यार्थियों को ऑफलाइन कोचिंग देना सम्भव नहीं है, अतः इन्हें ऑनलाइन कोचिंग देने के लिए विभाग

यह रहा सफलता का सार

- सरकारी स्कूल की प्रतिभाओं के लिए सरकार द्वारा चलाया गया नवाचारी प्रेरक प्रकल्प
- मेरिट के आधार पर निष्पक्ष चयन, परिणाम केंद्रित संस्था को अध्यापन का प्रभार
- विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, निदेशक व कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा समय अनुसार निरीक्षण एवं प्रोत्साहन
- माँ जैसी भूमिका अदा करने वाली डाइट संस्थान की विजनरी प्राचार्या
- विद्यार्थियों की सच्ची साधना, जिसके अंतर्गत जिन्होंने दो वर्ष तक बाजार, मोबाइल व टीवी का मुँह-माथा तक नहीं देखा, कभी कोई छुट्टियाँ नहीं मनाईं
- अभिभावकों का बहुआयामी रचनात्मक सहयोग
- टीचिंग फैकेल्टी का विषय विशेष के अलावा प्रतियोगी पक्ष हेतु निरंतर बहुआयामी मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन
- हर मोर्चे पर जीवंत प्रबंधन व सच्चा टीम वर्क इस सफलता का सार कहा जा सकता है ।

-सत्यवीर नाहड़िया

23 विद्यार्थियों ने इस वर्ष एडवांस परीक्षा पास कर बनाया इतिहास

इस वर्ष सुपर-100 के 23 विद्यार्थियों ने जेईई एडवांस की परीक्षा पास की है। इनमें रेवाड़ी केंद्र के 21 व पंचकूला केंद्र के 2 विद्यार्थी शामिल हैं। इनमें एससी कैटेगरी के 8, ओबीसी के 9 और सामान्य श्रेणी के 6 विद्यार्थी हैं। सिरसा की प्रवीन ने एससी कैटेगरी में ऑल इंडिया में 434 रैंक हासिल किया है, जबकि ओबीसी कैटेगरी में फतेहाबाद की काजल ने ऑल इंडिया में 293 रैंक प्राप्त किया। इनके अलावा सिरसा के युवराज, सोनीपत के दीशांत, अंबाला के निखिल और सुशील कुमार, चरखी दादरी के अनुराग, गुरुग्राम के प्रवीन कुमार, पंचकूला की ऋतू, भिवानी के सुशील कुमार और स्वाति, फतेहाबाद की भावना और जस्सी, कैथल के रवि भारती और हर्ष कौशिक, अंबाला की ऋतू, रोहतक की सिमरन, हिसार के सचिन, साहिल, जितेन, सचिन और विनोद, जींद के राहुल ने भी एडवांस की परीक्षा में अच्छा रैंक लेकर आईआईटी की सीट पर कब्जा किया है।

द्वारा टेबलेट उपलब्ध करवाए गए हैं।

सत्र 2020-22 के लिए राज्यस्तरीय परीक्षा के माध्यम से लगभग 750 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। भविष्य में राज्य के अन्य जिलों में भी विभिन्न संस्थानों के सहयोग से इस कार्यक्रम को आरम्भ करके, इसका विस्तार किए जाने की योजना है। सम्भवतः इस प्रकार की योजनाएँ भविष्य में सम्पूर्ण देश के लिए नए आयाम स्थापित करते हुए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करेगी। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले इन मेधावी विद्यार्थियों का निजी स्कूलों की ओर पलायन रुकेगा तथा आर्थिक अभाव में उच्च स्तर का इंजीनियर और डॉक्टर बनने का सपना नहीं टूटेगा। वास्तव में सुपर-100 कार्यक्रम सपनों को उड़ान देने वाला साबित हुआ है, जिसके कारण देश को उच्चकोटि के इंजीनियर और डॉक्टर प्राप्त होंगे। देश की फिजा बदलेगी, नव समाज का निर्माण होगा।

(इनपुट-
प्रमोद कुमार, संजय कुमार, सत्यवीर नाहड़िया, डॉ. प्रदीप राठौर)

कार्यक्रम अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा विभाग,हरियाणा, पंचकूला

क्रमांक	नाम	पिता जी का नाम	जिला	वर्ग	एडवांस रोल नंबर	ऑल इंडिया रैंक	विशेष टिप्पणी
1	प्रवीन	सोफत राय	सिरसा	अनुसूचित जाति	7011123	SC- 434	उत्तीर्ण
2	साहिल	धर्मपाल	हिसार	अनुसूचित जाति	7006004	SC- 871	उत्तीर्ण
3	दिशांत	दिलबाग	सोनीपत	अनुसूचित जाति	7017048	SC-1070	उत्तीर्ण
4	सुशील कुमार	चरणजीत सिंह	अंबाला	अनुसूचित जाति	7006224	SC-1250	उत्तीर्ण
5	अनुराग	मनोज कुमार	चरखी दादरी	अनुसूचित जाति	2008247	SC-1280	उत्तीर्ण
6	परवीन कुमार	महेंद्र सिंह	गुरुग्राम	अनुसूचित जाति	2054196	SC-2328	उत्तीर्ण
7	सचिन	वेदप्रकाश	हिसार	अनुसूचित जाति	7008043	SC-3149	उत्तीर्ण
8	निखिल	गुरदेव सिंह	अंबाला	अनुसूचित जाति	7007032	SC-2381	उत्तीर्ण
9	युवराज	राजा राम	सिरसा	अन्य पिछड़ा वर्ग	2114201	OBC-8779	उत्तीर्ण
10	सुशील कुमार	पवन	भिवानी	अन्य पिछड़ा वर्ग	7010012	OBC -7938	उत्तीर्ण
11	भावना	इंद्र कुमार	फतेहाबाद	बीसी ए	7008228	OBC -7663	उत्तीर्ण
12	रवि भारती	सुरेश कुमार	कैथल	बीसी बी	7012016	OBC -7630	उत्तीर्ण
13	जस्सी	कृष्ण कुमार	फतेहाबाद	अन्य पिछड़ा वर्ग	7008194	OBC -7316	उत्तीर्ण
14	रितु	जगमाल सिंह	अंबाला	अन्य पिछड़ा वर्ग	7006167	OBC -6482	उत्तीर्ण
15	काजल	शुभचरण	फतेहाबाद	अन्य पिछड़ा वर्ग	7008038	OBC -293	उत्तीर्ण
16	सिमरन	श्रीनिवास	रोहतक	अन्य पिछड़ा वर्ग	2047186	OBC -1392	उत्तीर्ण
17	जितेन	कृष्ण कुमार	हिसार	अन्य पिछड़ा वर्ग	7006062	OBC -9044	उत्तीर्ण
18	राहुल	राजेश	जींद	सामान्य	7011069	GEN-7398	उत्तीर्ण
19	विनोद	मोहन सिंह	हिसार	सामान्य	7009244	GEN-27607	उत्तीर्ण
20	सचिन	रोहताश	हिसार	सामान्य	7009258	GEN-26394	उत्तीर्ण
21	हर्ष कौशिक	सुरेश कुमार	कैथल	सामान्य	7012422	GEN-20140	उत्तीर्ण
22	स्वाति	शक्ति सिंह	भिवानी	सामान्य	7009094	GEN-18673	उत्तीर्ण
23	रितु	रणबीर सिंह	पंचकूला	सामान्य	7004061	GEN-12508	उत्तीर्ण

'नीट' परीक्षा में भी 'सुपर-100' का करिश्मा

84 विद्यार्थियों में से 72 को मिली सफलता, रचा इतिहास

डॉ. प्रदीप राठौर

आईआईटी की परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्टता हासिल करने के बाद शिक्षा विभाग के सुपर-100 कार्यक्रम के विद्यार्थियों ने नीट-2020 परीक्षा में भी अपनी सफलता का परचम लहराया है। उक्त परीक्षा में बैठे 84 विद्यार्थियों में से 72 द्वारा इस प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षा को क्वालीफाई करना अपने आप में करिश्मामयी उपलब्धि है।

रेवाड़ी केंद्र में 40 में से 38 और पंचकूला केंद्र में 44 छात्रों में से 34 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय पात्रता और प्रवेश परीक्षा (नीट) में सफलता पाई। गौरतलब है कि देशभर के मैडिकल कॉलेजों में प्रवेश पाने के लिए यह परीक्षा अनिवार्य है। जेईई एडवांस में सुपर-100 के विद्यार्थियों के शानदार प्रदर्शन से यह तो उम्मीद लगाई जा रही थी कि 'एनईईटी' का परिणाम भी अच्छा होगा। लेकिन यह परिणाम तो उम्मीद से भी अधिक रहा। रेवाड़ी में कार्यक्रम के मुख्य शिक्षक श्री नवीन मिश्रा ने उम्मीद जताई कि इन में से 20 से अधिक विद्यार्थियों को राजकीय कॉलेजों में बीडीएस, एमबीबीएस, बीएएमएस जैसे पाठ्यक्रमों में प्रवेश मिल जाएगा।

इन छह दर्जन चयनित विद्यार्थियों में से अधिकांश का निम्न मध्यवर्गीय परिवार से होना, निरंतर अध्यवसाय से अपने सपने को साकार करना, प्रदेश सरकार की इस योजना से नई संभावनाओं के द्वार खुलना आदि इस नयी परियोजना से जुड़े अनूठे पहलू हैं।

ट्रक ड्राइवर का पुत्र है बैच का टॉपर दीपक

सुपर-100 नीट बैच के टॉपर रहे छात्र दीपक बताते हैं कि उन्हें उत्कृष्ट फैकल्टी पढ़ाती थी, छात्रावास में उनका विशेष ध्यान रखा जाता था, उन्होंने तथा उनके परिवार ने कभी सोचा नहीं था कि ऐसा कुछ निःशुल्क हो सकता है।

दीपक ने ईडब्ल्यूएस केटेगरी में 2512 ऑल इंडिया रैंकिंग प्राप्त की। उसने कहा- मैं अपने प्रदर्शन से बहुत संतुष्ट हूँ। मैं इसका श्रेय राज्य सरकार के सुपर-100 कार्यक्रम को देना चाहता हूँ। जब मैं ग्रामीण स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं को देखता था तो मेरे मन में आया करता था कि मैं भी डॉक्टर बन कर समाज के लिए कुछ करूँ। लेकिन सपना देखा अलग बात है, उसका हकीकत में तबदील होना दूसरी बात। मेरे पिता जी ट्रक ड्राइवर हैं। 'सुपर-100' में प्रवेश न मिलता तो कोचिंग सैंटरों की भारी फीस देने के हमारे पास पैसे नहीं थे। अब इस कार्यक्रम की वजह से मेरा और मेरे जैसे अनेक विद्यार्थियों का सपना साकार होने जा रहा है।

दीपक के पिता सुभाष कहते हैं कि इस योजना के कारण ही यह सब संभव हो पाया। सारा श्रेय सरकार की इस अनूठी योजना को जाता है। दीपक की माँ अनीता कहती है कि पढ़ाई में अच्छे किंतु जरूरतमंद बच्चों के लिए इस योजना की जरूरत भी थी जो सरकार ने पूरी की है। जींद जिले की उचाना तहसील के गाँव का काबरछा में दीपक की इस सफलता से गाँव में खुशी का माहौल है।

-सत्यवीर नाहड़िया

720 में से 628 अंक लेकर सुनील ने रचे नए आयाम

नीट में रेवाड़ी के राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ततारपुर की प्रतिभाशाली छात्रा कुमारी सुनील ने 720 में से 628 अंक लेकर नए आयाम रचे हैं। गौरतलब है कि यह सुपर-100 की छात्रा भी नहीं थी।

रेवाड़ी जिले के बुडाना गाँव के साधारण परिवार में जन्मी मेधावी छात्रा कुमारी सुनील बताती है कि उन्हें तथा उनके परिवार को सरकारी स्कूल पर पूरा विश्वास था। वह अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजन एवं परिजनों को देती है। एक सफल डॉक्टर बनकर वह राष्ट्र सेवा करना चाहती है।

परीक्षा परिणाम की उक्त सूचना मिलते ही जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार तथा जिला परियोजना समन्वयक राजेंद्र सिंह यादव ने विद्यालय पहुँचकर मेधावी छात्रा के अलावा विद्यालय के प्राचार्य धर्मबीर सिंह यादव तथा स्टाफ को सम्मानित किया।

विद्यालय के विज्ञान संकाय के प्राध्यापक संजय यादव, विनोद मेहता, शोभा तथा परमजीत सिंह ने इसे एक सच्चे टीम वर्क का प्रतिफल बताया। सरकारी स्कूल की इस सफलता से क्षेत्र के अन्य सरकारी स्कूल बेहद उत्साहित हैं।

-सत्यवीर नाहड़िया

नीट परीक्षा में रचा बच्चों ने इतिहास

नीट परीक्षा में रचा, बच्चों ने इतिहास,
पढ़ सरकारी स्कूल में, सभी हुए हैं पास।
अवसर सबको दे रही, हरियाणा सरकार,
सुपर सौ में पा जगह, कर लो नैया पार।
बिना फीस के हैं बनें, बालक अब सिरमौर,
उत्तम शिक्षा का यहाँ, अब आया है दौर।
सरकारी शिक्षा बनी, अब सबका आधार,
खेतीहर मजदूर हो, या फिर सेवादार।
कोरोना के काल में, गजब सुनाई न्यूज,
नीट परीक्षा में मिली, हमें सफलता ह्यूज।
सरकारी शिक्षा बनी, गुणवत्ता का धाम,
जेईई में बढ़ किया, सब बच्चों ने नाम।
जनता सारी खुश हुई, खुश हैं यूँ सरकार,
सपने सबके सच हुए, खुशियाँ मिलीं अपार।
जनता को खुशियाँ मिलें, होते सब अभिभूत,
शिक्षक गण की साधना, जब होती फलीभूत।
शिक्षा क्षेत्र में हुआ, देखो यह प्रबन्ध।
बिन खर्चा आगे बढ़े, राम रहीम व नंद।
सक्षम बन कर तुम करो, बेहतर यह संसार,
बालक सारे अब पढ़ें, कहती यह सरकार।

- श्रीभगवान बव्वा
प्रवक्ता अंग्रेजी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लुखी, रेवाड़ी

इस परीक्षा का परिणाम आते ही विद्यालय शिक्षा विभाग में हर्ष की लहर दौड़ उठी। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने ट्वीट करके बधाई संदेश दिया। उन्होंने कहा- प्रदेश सरकार द्वारा साधारण परिवारों के मेधावी छात्रों के लिए आरंभ किये गए 'सुपर-100 कार्यक्रम के अन्तर्गत 72 विद्यार्थियों के एनईईटी परीक्षा पास करने पर मैं सभी को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। इन सभी विद्यार्थियों के उत्साहवर्धक परिणामों से दूसरे गरीब छात्रों को भी प्रेरणा मिलेगी।

विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री महावीर सिंह ने अपने बधाई संदेश में कहा कि हरियाणा सरकार की सुपर-100 योजना राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही है। 84 विद्यार्थियों में से 72 का इस परीक्षा में क्वालिफाई कर जाना एक जबरदस्त उपलब्धि है। अब ये विद्यार्थी विभिन्न मैडिकल, आयुर्वेदिक, डैंटल, नेचुरोपैथिक कॉलेजों में प्रवेश लेने के योग्य बन गए हैं।

उन्होंने अपने संदेश में न केवल सफल रहे विद्यार्थियों को बधाई दी, बल्कि कार्यक्रम के मशालवाहकों के प्रति भी आभार जताया। उन्होंने विकल्प फाउंडेशन रेवाड़ी के नवीन मिश्रा और एस ट्यूरोरियल्स, पंचकूला की श्रीमती मीना गुप्ता का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया। उन्होंने साधारण पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले इन विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की।

drpradeeprathore@gmail.com

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा

19 नवंबर तक करें आवेदन, परीक्षा 13 दिसंबर को

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा की प्रक्रिया 20 अक्तूबर से शुरू हो गई है। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन भरे जा रहे हैं, जिसकी अंतिम तिथि 19 नवंबर 2020 है। इसमें स्टेज-वन (राज्य स्तर) की परीक्षा 13 दिसंबर 2020 दिन रविवार और स्टेज-टू (राष्ट्रीय स्तर) की परीक्षा की तिथि 13 जून 2021 को आयोजित की जाएगी । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा 10वीं कक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं में प्रतिभा की पहचान के लिए एनटीएसई स्टेज-1 परीक्षा राज्य स्तरीय होगी, जबकि स्टेज-2 परीक्षा एनसीईआरटी की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाएगी। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के अंतर्गत चयनित छात्र-छात्राओं को 11वीं से लेकर पीएचडी तक छात्रवृत्ति सरकार द्वारा दी जाएगी। स्टेज वन परीक्षा के लिए आवेदन की प्रक्रिया विभाग की वेबसाइट के माध्यम से पूरी की जाएगी। स्टेज-1 यानी राज्य स्तर पर हरियाणा प्रदेश के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए 13 दिसंबर, 2020 को यह परीक्षा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी की ओर से आयोजित की जाएगी। इस परीक्षा में चयनित 186 प्रतिभाशाली विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर के लिए पात्र होंगे। इन चयनित विद्यार्थियों की राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा यानी स्टेज- टू 13 जून, 2021 को एनसीईआरटी दिल्ली की ओर से आयोजित की जाएगी। इस परीक्षा में उत्तीर्ण देश भर के दो हजार विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलेगी।

यहाँ करें आवेदन-

ऑन लाइन आवेदन एससीईआरटी की वेबसाइट scert-haryana.gov.in तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी की वेबसाइट www.bseh.org.in पर किया जा सकता है।

चयनित विद्यार्थियों को ये मिलेगी छात्रवृत्ति-

कक्षा 11 और कक्षा 12 में पढ़ाई के दौरान 1250 रुपये प्रतिमाह, पोस्ट ग्रेजुएशन और अंडर ग्रेजुएशन स्तर पर पढ़ाई के दौरान 2,000 रुपये प्रतिमाह, पीएचडी के दौरान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के मानकों के अनुसार राशि निर्धारित होगी।

कौन विद्यार्थी हैं परीक्षा के लिए पात्र-

छात्रों को इस परीक्षा का लाभ कॉलेज एडमिशन की कट ऑफ में भी मिलता है। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा 2020-21 के लिए वे ही छात्र- छात्राएँ आवेदन कर पाएँगे जो शैक्षणिक सत्र 2020-21 में किसी मान्यता प्राप्त सरकारी या निजी विद्यालय में कक्षा दसवीं में पढ़ाई कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने नौवीं कक्षा में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों। आरक्षित वर्ग के लिए पाँच प्रतिशत की छूट मिलेगी।

उपलब्धि

बेहद साधारण परिवारों से हैं सुपर-100 के सितारे

हिसार का साहिल अपने परिवार के साथ

सत्यवीर नाहड़िया

यदि किसी लक्ष्य को निर्धारित करके उसके प्रारूप के अनुसार सच्ची साधना की जाए, तो सफलता अवश्य मिलती है- यह कर दिखाया है हरियाणा सरकार के नवाचारी प्रकल्प सुपर-100 ने जिसके 23 बच्चों ने आईआईटी-एडवांस क्वालीफाई कर एक अनूठा इतिहास रचा है। बेहद साधारण परिवारों के इन मेधावी विद्यार्थियों ने असाधारण प्रतिभा के बूते पर ऐसे आयाम रचे हैं, जो सभी शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रेरणापुंज हैं। ये विद्यार्थी तथा इनके अधिकांश अभिभावक प्रदेश सरकार की इस नई परियोजना को शैक्षणिक क्षेत्र का एक अनूठा वरदान मानते हैं। दिलचस्प पहलू यह है कि अधिकांश विद्यार्थी निम्न मध्यवर्गीय परिवारों से ताल्लुक रखते हैं, जिन्होंने तथा जिनके अभिभावकों ने यह नहीं सोचा था कि आईआईटी उनके लिए भी बनी है, किंतु अब वे मानते हैं कि सरकार की इस अनूठी योजना से उनके सपने सच हो गए हैं।

मुन्नावाली (सिरसा) का एकड़ का किसान सोपत राय तथा उनकी गृहिणी पत्नी सरोज बेहद खुश हैं कि उनके बेटे प्रवीन ने यह सफलता हासिल की है। प्रवीन स्वीकारता है कि सर..! आईआईटी क्या होती है, यह पता भी नहीं था, किंतु खुली आँख देखा यह सपना सरकार की इस योजना ने सच कर दिखाया। हिसार जिले के मुगलपुरा गाँव के धर्मपाल के पास तो एक एकड़ से भी कुछ कम जमीन है, किंतु उनके मेधावी पुत्र साहिल ने सच्ची साधना से यह कर दिखाया है। साहिल की माँ शारदा इस योजना को वरदान मानती हैं। साहिल कहता है कि सभी गुरुजन तथा प्रबंधन में जुटी टीम ने दिन-रात सहयोग किया। जुड़ौला(गुरुग्राम) निवासी महेंद्र सिंह मानेसर की एक प्राइवेट कंपनी में सेवारत हैं। उनका मानना है कि उनके पुत्र प्रवीन कुमार केवल सुपर-100 की बदौलत इस मुकाम पर पहुँचे हैं। पंचकूला के सचिन की माता किताबो तथा पिता वेद प्रकाश बताते हैं कि अध्यापन के अलावा छात्रावासीय प्रबंधन भी सराहनीय रहा।

सिरसा का प्रवीन अपने परिवार के साथ

सिरसा जिले के अबूबशहर गाँव के राजाराम तथा सुनीता देवी अपने मेधावी पुत्र युवराज की इस सफलता पर अभिभूत हैं तथा 8वीं में अध्ययनरत अपने दूसरे पुत्र अमनदीप को भी सुपर-100 के लिए अभी से तैयार कर रहे हैं। मात्र एक एकड़ की किसानी संस्कृति में जीवन यापन करने वाले बनमंडोरी गाँव के किसान इंदर कुमार व उनकी पत्नी इंद्रावती अपनी बेटी भावना की सफलता पर बेहद खुश हैं। भावना कहती है कि सरकार ने सही मायने में हमारे सपने साकार किए हैं। अंबाला जिले के नगाँवा गाँव के मजदूर जगमाल सिंह कहते हैं कि हम तो आईआईटी के बारे में सोच भी नहीं सकते थे, किंतु इस योजना से जुड़े सभी पक्षों तथा बेटी रितु की साधना से यह संभव हो पाया।

फतेहाबाद जिले के इंडाछोई गाँव के दो एकड़ के किसान शुभचरण व उनकी अर्धांगिनी सरोज अपनी मेधावी बेटी काजल की सफलता पर तो खुश हैं ही, किंतु साथ ही वे बताते हैं कि हमारे से ज्यादा अच्छा संरक्षण रेवाड़ी प्रवास के दौरान प्रबंधन समिति का रहा है। रोहतक जिले के हसनगढ़ गाँव के बेहद छोटे किसान श्रीनिवास तथा उनकी पत्नी सुनीता बताते हैं कि उनकी बेटी सिमरन

सरकारी स्कूल के असली हीरे हैं योगिता व अनुज

(राजकीय विद्यालयों के जेईई एडवांस परीक्षा में सफल रहे वे विद्यार्थी जो सुपर-100 का हिस्सा नहीं थे।)

बिना ट्यूशन, बिना किसी अन्य अतिरिक्त कोचिंग सरकारी स्कूल से आईआईटी एडवांस जैसी कठिन परीक्षा क्वालीफाई करना ग्रामीण प्रतिभाओं तथा उनके स्कूल की सच्ची साधना का प्रमाण कहा जा सकता है। शैक्षणिक सांस्कृतिक तथा खेलकूद गतिविधियों में राज्य स्तर पर रोहतक जिले का निरंतर प्रतिनिधित्व करने वाले सांघी

स्थित डॉ. स्वरूप सिंह गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल की मेधावी छात्रा योगिता व अनुज ने यह करिश्माई सफलता हासिल कर नया इतिहास रचा है।

सांघी गाँव के किसान नरेंद्र कुमार की होनहार पुत्री योगिता की माता सुलोचना गृहिणी हैं। किसान नरेंद्र कहते हैं-भला हो सरकारी स्कूल के सच्चे गुरुजन का, सब कुछ उनकी ही देन है!

इसी स्कूल से दसवीं कक्षा में 98.4 प्रतिशत अंक लेकर हरियाणा भर में पांचवें स्थान पर रही योगिता बताती हैं कि उसके गुरुजन जितेंद्र सिंह नारा, रीता मेहलान, जेपी कौशिक ने क्रमशः भौतिकी, रसायन व गणित को गहराई से पढ़ाया, अन्य विषयों के गुरुजन ने भी विशेष मार्गदर्शन व प्रोत्साहन दिया। प्राचार्य जयपाल सिंह भी प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का व्यक्तिगत अतिरिक्त मार्गदर्शन करते हैं। योगिता के चाचा प्रवीन कुमार उक्त सफलता तथा 12वीं में 95 प्रतिशत अंकों को विद्यालय परिवार की समर्पित टीम का प्रतिफल मानते हैं।

इसी विद्यालय के छात्र अनुज ने दसवीं में 93 प्रतिशत तथा 12वीं में 92 प्रतिशत अंक लेने के अलावा उक्त परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। अनुज पहली कक्षा से इसी विद्यालय में पढ रहा है। वह आठवीं कक्षा से प्रतिदिन 6 किलोमीटर साइकिल चलाकर अपने गाँव गिल्होड़ खुर्द से यहां पढ़ने आता है।वह इस सारी सफलता का श्रेय अपने गुरुजन एवं परिजनों को देता है। उसकी छोटी बहन विभा व भाई नकुल भी इसी विद्यालय में क्रमशः 11वीं और नवीं कक्षा में पढ़ रहे हैं। अनुज के जेई पिता सुल्तान सिंह का कहना है कि हमारा यह सरकारी स्कूल प्राइवेट स्कूलों से लाख दर्जे अच्छा है।

राज्य शिक्षक पुरस्कार से अलंकृत विद्यालय के प्राचार्य जयपाल सिंह दहिया ने बताया कि इससे पूर्व वर्ष 2017 में जहां विद्यालय की मेधावी छात्रा अन्नु का एमबीबीएस में चयन हुआ था,वहीं वर्ष 2019 में छात्रा बुलबुल ने बीडीएस में चयनित होकर विद्यालय को गौरवान्वित करवाया है तथा सुपर-100 में वर्ष 2018 में 2019 में तीन-तीन तथा इस वर्ष 11 विद्यार्थियों का चयन हुआ है। वे भविष्य में भी इसी प्रतिबद्धता को दोहराने के लिए कृत संकल्प हैं।

ने उनका पूरे क्षेत्र मे नाम रोशन किया है, किंतु उन्हें यह मलाल भी है कि ऐसी अनूठी योजना पहले नहीं थी, अन्यथा उनकी बड़ी बेटी शिखा, जिन्होंने 12वीं कक्षा में गाँव के सरकारी स्कूल में टॉप किया था, को भी ऐसा अवसर मिल पाता। हिसार जिले के डोभी गाँव में दर्जी का काम करने वाले कृष्ण कुमार तथा उनकी पत्नी शकुंतला अपने बेटे जितेन की सफलता से गौरवान्वित हो बताते हैं कि यह योजना हर लिहाज से प्रशंसनीय है। मात्र चार कनाल कृषि पर केंद्रित किसान मोहन सिंह हिसार जिले के किरमारा गाँव से हैं। वे कहते हैं कि उनके मेधावी पुत्र विनोद को इस योजना ने नए पंख दिए हैं। छोटी बेटी पूजा को भी आगे इसी राह के लिए तैयार करेंगे।

हिसार जिले के सरसाना गाँव के किसान रोहतास तथा उनकी पत्नी मीनावती अपने मेधावी पुत्र सचिन की

फतेहाबाद की भावना अपने माता-पिता और भाई के साथ

अम्बाला की रितु अपने परिवार के साथ

इस सफलता से फूले नहीं समा रहे तथा कहते हैं कि हम सरकार के कृतज्ञ हैं।

इसी सूची में चयनित कैथल जिले के सोंगल गाँव निवासी हर्ष कौशिक के पिता अतिथि जेबीटी अध्यापक सुरेश कुमार कहते हैं कि प्रतिभाओं का सच्चा संरक्षण एवं सम्मान इस योजना के माध्यम से हुआ है। वे बताते हैं कि हर माह रेवाड़ी बच्चे से मिलने जाते थे, जहाँ डाइट प्राचार्य, स्टाफ तथा पढ़ाने वाली टीम का समर्पण देखते बनता था।

डिघाना (जींद) जिले की मूलनिवासी तथा पंचकूला में रह रहे मजदूर परिवार की बेटी रितु ने नए आयाम रचे हैं। उनके पिता रणबीर सिंह तथा माता प्रमिला इसे सरकार की सच्ची वह अनूठी योजना मानते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। नीलम जो स्वयं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय राजौंद में प्राध्यापिका हैं, बताती हैं कि फैकल्टी जिस समर्पण के भाव से अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है, वह अपने आप में एक मिसाल है। गौरतलब है कि इनकी सुपुत्री सुमेधा शर्मा 12 वीं कक्षा में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त करके सुपर-100 की टॉपर रही है।

छात्र सुशांत, सुशील कुमार, अनुराग, निखिल का मानना है कि बेहतरीन फैकल्टी कुशल प्रबंधन तथा निरंतरता व नियमितता से यह हो पाया। छात्र सुशील कुमार, रवि भारती, जस्सी, राहुल तथा स्वाति का कहना है कि प्रदेश सरकार ने सरकारी स्कूलों के मेधावी वर्ग को सच्चा मार्गदर्शन व प्रोत्साहन देकर अनूठी पहल की है जिसके लिए हम आभारी हैं। इन सभी विद्यार्थियों को इस दौरान साइंस सिटी कपूरथला का शैक्षणिक भ्रमण तथा रेवाड़ी के बीएमजी मॉल में एक साथ देखी फिल्म सुपर-थर्टी की अनमोल स्मृतियाँ आज भी ताज़ा हैं।

डाइट हुसैनपुर (रेवाड़ी) के तत्कालीन प्राचार्य तथा विभाग के संयुक्त निदेशक संगीता यादव का मानना है कि सरकार की इस नवाचारी प्रकल्प में रचनात्मक टीमवर्क से यह सफलता मिली है, जिसमें सरकार द्वारा छात्रावास तथा फैकल्टी को खुले दिल से बजट देना, विभाग के निदेशक राकेश गुप्ता जी, राज नारायण कौशिक जी, कार्यक्रम अधिकारी प्रमोद कुमार जी तथा जिला उपायुक्त यशेंद्र सिंह का निरंतर मार्गदर्शन व प्रोत्साहन, विकल्प संस्था का समर्पित अध्यापन, डाइट के पूरे स्टाफ व कर्मचारियों का दिन-रात जुटे रहना, विद्यार्थियों की साधना तथा अभिभावकों का सहयोग उल्लेखनीय है। विकल्प संस्था के प्रणेता आईआईटियन नवीन मिश्रा इन विद्यार्थियों की प्रेरक प्रतिपुष्टि से अभिभूत हैं। उक्त डाइट हॉस्टल में प्रबंधन प्रभारी डॉ. बीरसिंह यादव, डाइट में ही सेवारत अनिल यादव ने भी इस सफलता को बहुआयामी टीमवर्क की साधना बताया।

प्राध्यापक (रसायनशास्त्र)
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी (रेवाड़ी)

हसनगढ़, रोहतक की सिमरन अपने परिवार के साथ

इतिहास रच रहा है विद्यालय शिक्षा विभाग

सरकार की कल्याणकारी तथा विद्यार्थी केन्द्रित नीतियों का परिणाम है कि स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा शानदार तरीके से आगे बढ़ रहा है तथा अन्य राज्यों के लिए भी मार्गदर्शक बन रहा है। हरियाणा के दसवीं और बारहवीं के बोर्ड परीक्षाओं के परिणामों ने सरकारी स्कूल व्यवस्था को खुद पर गर्व करने का अवसर दिया है, राज्य में दसवीं के परीक्षा परिणामों में जहाँ इस वर्ष 10 प्रतिशत से अधिक का उछाल आया है वहीं यमुनानगर तथा पंचकूला जिलों द्वारा शानदार सुधार किया गया तथा 25 प्रतिशत से 35 प्रतिशत तक की वृद्धि की गई, जो अभूतपूर्व है। सरकारी स्कूलों ने प्राइवेट को अच्छे से पछाड़ा है। बारहवीं के परीक्षा परिणामों ने तो सबको खुलकर आनन्द मनाने तथा गर्व करने का अवसर प्रदान किया है जिसमें 86 प्रतिशत छात्राओं तथा 75 प्रतिशत छात्रों ने सफलता प्राप्त की। ग्रामीण क्षेत्रों के 79 प्रतिशत बच्चे पास हुए जबकि शहरी क्षेत्र के 82 प्रतिशत बच्चे पास हुए। यह परिणाम किसी भी राज्य के लिए गर्व का अनुभव करवाने के लिए पर्याप्त है। गत वर्ष की दसवीं और बाहरवीं की मैरिट का अवलोकन करें तो उसमें भी वृद्धि हुई है। सरकारी विद्यालयों से 2019 में दसवीं कक्षा में जहाँ 9,563 विद्यार्थी 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर अर्थात मेरिट से पास हुए, वहीं उनकी संख्या 2020 सीधे 15,246 पहुँच गई। यह 54 प्रतिशत की वृद्धि अपने आप में बहुत कुछ कहती है। यदि बाहरवीं कक्षा का जिक्र करें तो वर्ष 2019 में घोषित परिणामों के अनुसार 13,223 विद्यार्थी मैरिट के साथ पास हुए जबकि वर्ष 2020 में संख्या 23,385 पर पहुँच गई है। सीधे 77 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जबकि प्राइवेट स्कूलों में दसवीं में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा बारहवी में 70 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अब लगता है ये बढ़े हुए कदम नहीं रुकेंगे, सकारात्मकता का यह वातावरण अपने लिए नये लक्ष्य निर्धारित करके उन्हें प्राप्त करेगा। आज का नेतृत्व माननीय मुख्यमन्त्री महोदय के कुशल मार्गदर्शन में कार्य कर रहा है, माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय के नेतृत्व में तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव के निर्देशन में निरन्तर आगे बढ़ रहा है।

बीते दिनों एक और सुखद समाचार प्राप्त हुआ। वह था सुपर-100 कार्यक्रम के विद्यार्थियों की जबरदस्त सफलता। इस समाचार ने संपूर्ण शिक्षा जगत को आह्लादित कर दिया। जुलाई 2018 में आरंभ हुए इस कार्यक्रम का उद्देश्य अन्त्योदय के सपने को साकार करना था तथा ''सबका साथ सबका विकास'' की अवधारणा को धरातल पर लाना था। सरकार का उद्देश्य अन्तिम व्यक्ति के सशक्तीकरण के लिए प्रयास करना है। यह योजना भी उसी सन्दर्भ में बनाई गई है। राज्य के सरकारी विद्यालयों में मैरिट लेकर अथवा 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर भी विद्यार्थी कोचिंग सैन्टर की मोटी फीस न भर पाने के कारण प्रतियोगिता में पिछड़ जाते थे और देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह जाते थे। आज ये विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें प्रशिक्षण के साधन उपलब्ध हो गए हैं तो उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन करके सफलता भी प्राप्त कर ली है। इन्हीं धारणाओं को ध्यान में रखते हुए यह योजना बनाई गई है ताकि प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे मेधावी विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठाकर हॉस्टल में रहकर व उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने सपने साकार कर सकें।

इन विद्यार्थियों को वर्दी, पाठ्य-पुस्तकें, स्टेशनरी, भोजन, परिवहन और होस्टल सुविधा निःशुल्क उपलब्ध करवाई गई तथा इस पर खर्च सरकार द्वारा वहन किया गया। विद्यार्थियों के मनोबल को श्रेष्ठ रखने, उन्हें अभिप्रेरित करने, पठन-पाठन को लेकर उनका उत्साह बनाए रखने के लिए भिन्न-भिन्न कार्यक्रम जिसमें खेलकूद, योग, ध्यान, मनोवैज्ञानिक परामर्श आदि चलाए गए। एक विभागीय कमेटी हर तीन मास की प्रगति रिपोर्ट बनाकर निदेशक सैकेण्डरी शिक्षा के साथ-साथ एसीएसई महोदय को प्रस्तुत करती थी। विद्यार्थियों के अभिभावकों से मिलने के लिए पीटीएम आदि में शामिल होकर बच्चे की प्रगति रिपोर्ट साँझी करने के लिए समुचित व्यवस्था की गई थी। आईसीटी के माध्यम से बच्चे की साप्ताहिक रिपोर्ट भी माता-पिता को मोबाइल फोन पर उपलब्ध करवाई जाती थी। इन विद्यार्थियों को टेलीविजन, लेपटॉप, इंटरनेट और मोबाइल फोन से दूर रखा गया ताकि समय और ध्यान पढ़ाई पर लगा रहे।

इस कार्यक्रम से उन विद्यार्थियों को लाभ मिला जो कोचिंग के अभाव में पिछड़ जाते थे। प्रयोग के तौर पर आरम्भ किया गया यह कार्यक्रम 2018-20 की सफलता की कहानी कहता है जिसे विभाग माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नेतृत्व में तथा माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय के कुशल निर्देशन में आगे बढ़ा रहा है।

प्रमोद कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

वार्षिक अलंकरण समारोह में मेधावियों का हुआ सम्मान

डॉ. प्रदीप राठौर

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के वार्षिक अलंकरण समारोह में मेधावियों को सम्बोधित करते हुए माननीय शिक्षा मंत्री कँवर पाल ने कहा कि वे प्रदेश के हजारों दूसरे विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी होंगे। अन्य विद्यार्थी भी इनसे प्रेरणा लेंगे। शिक्षा मंत्री बीते दिनों सैक्टर-1 पंचकूला स्थित पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह के सभागार में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के तत्वावधान में आयोजित 'प्रतिभा सम्मान समारोह' में बतौर मुख्यातिथि पधारे थे। इस समारोह में हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए।

शिक्षा मंत्री कँवर पाल ने शिक्षा बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष प्रदेश के सरकारी स्कूलों के 25 विद्यार्थी आईआईटी में प्रवेश के लिए चयनित हुए है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आगामी वर्ष 50 से अधिक विद्यार्थियों का चयन होगा। यह प्रदेश की बेहतर शिक्षा का ही परिणाम है।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति कारगर तरीके से लागू की जाएगी। विद्यार्थियों को ज्ञानवान व समर्थ बनाया जाएगा, रटने की प्रवृत्ति को खत्म किया जाएगा जिससे वे योग्य बने, आत्मनिर्भर बनें। प्रदेश का कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। हर बच्चे को प्री-स्कूल से लेकर उच्चतर शिक्षा स्तर तक की शिक्षा उसकी सुविधा एवं सहजता से उपलब्ध करवाने के लिए नई शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तन किये गए हैं। शिक्षा मंत्री तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय सैक्टर-20 के विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि राज्य में पिछले 5 वर्ष से पढ़ाई का माहौल निरंतर सुधर रहा है जिसका सबूत हर वर्ष पास-प्रतिशतता में हो रही बढ़ोतरी है। हरियाणा के सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं।

उन्होंने अलंकरण समारोह में वर्ष 2020 में प्रदेश में 10वीं व 12वीं कक्षा में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले राजकीय व गैर-राजकीय स्कूलों के 24 होनहारों को डॉ. कल्पना चावला अवार्ड, स्वर्ण पदक व रजत पदक देकर सम्मानित किया। उन्होंने पदक के साथ विद्यार्थियों को क्रमशः 51,000 रुपए और 31,000 रुपए की राशि के साथ सम्मानित किया उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर प्रथम रहने वाले 12 स्कूलों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। समारोह में 06 छात्राओं को डॉ. कल्पना चावला अवार्ड, 02 को गोल्ड और 16 विद्यार्थियों को सिल्वर मेडल देकर सम्मानित किया गया।

भिवानी की छवि, हिसार की ऋषिता, रेवाड़ी की भावना यादव, कैथल की पुष्पा, महेंद्रगढ़ की मनीषा,

हिसार की पल्लवी को डॉ. कल्पना चावला अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही फतेहाबाद के संयम और कुरुक्षेत्र के जसप्रीत सिंह को ओवरआल गोल्ड मेडल और 51 हजार रुपये नकद देकर सम्मानित किया गया। दूसरे स्थान पर रहने वाली हिसार की उमा, कल्पना, निकिता, स्नेह, अंकिता और रेवाड़ी की किरण कुमावत, भिवानी के अमित, चरखी दादरी की मोनू कुमारी, कुरुक्षेत्र की श्रुतिका, झज्जर की काजल को 31 हजार रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिसार के अंशु, जींद की मुस्कान, कुरुक्षेत्र के अक्षित को भी 31 हजार रुपये के नकद इनाम से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही कार्तिक, मोनिका और अमनदीप कौर को भी सम्मानित किया गया।

इनके अलावा सैकेंडरी परीक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर आरोही मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मन्धाना, महेंद्रगढ़, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फरीदाबाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्कूल, शिक्षा बोर्ड कैंपस, भिवानी, पीआरएस अन्तरराष्ट्रीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सतनाली, महेंद्रगढ़, जीएनजेएन गोयनका कन्या उच्च विद्यालय हिसार, राव दीनाराम विद्या विहार वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हालुहेड़ा, रेवाड़ी को तथा सीनियर सैकेंडरी परीक्षा में सराहनीय प्रदर्शन के लिए राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोंगल, कैथल, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिंधवीखेड़ा, जींद, आरोही मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मंधाना, महेंद्रगढ़, डीआरएम वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रूड़की, रोहतक, डीडीवाई वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खरक पांडवा, कलायत, कैथल, तथा आदर्श पब्लिक स्कूल बनावली, फतेहाबाद को भी सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त कोविड-19 महामारी पर जागरूकता लाने के उद्देश्य से आयोजित ऑनलाइन प्रतियोगिता में कक्षा छठी से बारहवीं तक के समूह में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 07 विद्यार्थियों को लैपटॉप देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री द्वारा अलंकरण समारोह में सम्मानित हुए सभी परीक्षार्थियों एवं अध्यापकों को बधाई दी। उन्होंने शिक्षा बोर्ड के वार्षिक अलंकरण समारोह के अवसर पर बोर्ड के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी।

अपने संबोधन में हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि स्कूलों में शिक्षा व सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ-साथ खेलों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों की समस्याओं पर चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षा का स्तर सुधारने का प्रयास करना चाहिए ताकि शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन हो सके।

श्री गुप्ता ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि मेहनत के बल पर लिया गया पारितोषिक विद्यार्थियों के जीवन में नया जोश भर देता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी भविष्य में भी इस मुकाम को कायम रखेंगे और जीवन में और ज्यादा ऊँचाइयों को छुएँगे। उन्होंने कहा कि सरकार ने प्रदेश में एक हजार संस्कृति स्कूल खोले हैं इनमें से पंचकूला को 38 स्कूल दिए। इनके संचालित होने से शिक्षा का स्तर ओर अधिक ऊँचा होगा और विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ सकेंगे। उन्होंने कहा कि वे अपने ऐच्छिक कोष से पंचकूला के 18 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में स्मार्ट क्लास रूम, बेहतर शौचालय व आरओ युक्त स्वच्छ पेयजल मुहैया करवाएँगे।

इस अवसर पर बोर्ड अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह ने शिक्षा मंत्री व अन्य मेहमानों को भेंट स्वरूप एक-एक तुलसी का पौधा देकर स्वागत किया तथा बोर्ड की उपलब्धियों से अवगत करवाया।

बोर्ड सचिव राजीव प्रसाद वार्षिक अलंकरण समारोह में पहुँचे मेहमानों का आभार प्रकट किया। विख्यात हरियाणवी लोकगायक महावीर गुड्डू ने राजा नाहर सिंह के जीवन पर आधारित एक गीत प्रस्तुत करके खूब समाँ बाँधा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रदीप राठौर के द्वारा बखूबी किया गया, जिसके लिए बोर्ड के सचिव जगबीर सिंह ने उन्हें सम्मानित किया।

इस मौके पर सम्मानित हुए विद्यार्थियों के अभिभावक, बोर्ड अधिकारी व कर्मचारियों के अलावा अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद थे। कार्यक्रम में निदेशक मौलिक शिक्षा प्रदीप डागर, नगर निगम आयुक्त महावीर सिंह, निदेशक एससीईआरटी गुरुग्राम ऋषि गोयल, संयुक्त निदेशक अनिल नागर, एसडीएम कालका राकेश संधु, जिला शिक्षा अधिकारी उर्मिल रानी सहित शिक्षा विभाग के कई अधिकारी मौजूद रहे।

drpradeeprathore@gmail.com

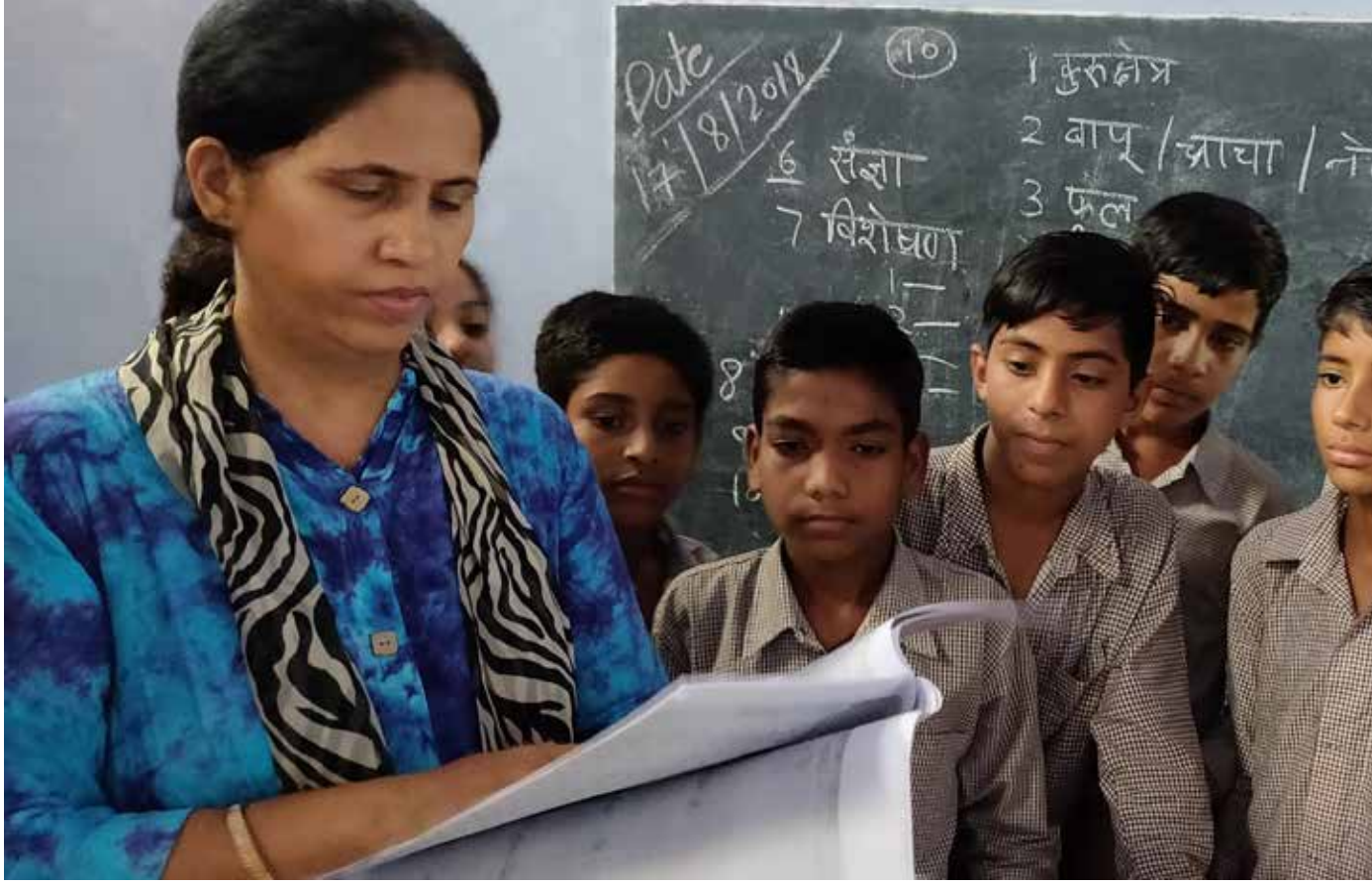

विश्व शिक्षक दिवस पर विशेष

शैक्षिक फलक पर रचनात्मकता के सितारे टाँकते शिक्षक

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

शिक्षक अपने काल का साक्षी होता है। वह विद्या का उपासक और साधक है तथा अप्रतिम कलाकार भी। वह अपनी मेधा, कल्पना, आत्मीयता, संवाद, सौंदर्यानुभूति से प्रेरित हो मानव जीवन को गढ़ता है, रचता है। वह बच्चों का मीत है, सखा है। वह बच्चों की प्रतिभा की उड़ान के लिए अनंत आकाश देता है तो नवल सर्जना हेतु वसुधा का विस्तृत कैनवास भी। वह बच्चों को मौलिक चिंतन-मनन करने, तर्क करने, सीखने, कल्पना एवं अनुमान करने एवं उनके स्वयं के ज्ञान निर्माण हेतु अनन्त अविराम अवसर और जगह उपलब्ध कराता है, फिर चाहे वह कक्षा हो या कक्षा के बाहर का जीवन। सीखने-सिखाने की रचनात्मक यात्रा में शिक्षक सदैव साथ होता है, पर केवल सहायक की भूमिका में। वह बच्चों के चेहरों पर खुशियों का गुलाल मल देता है। आँखों में रचनात्मकता की उजास और मस्तिष्क में कल्पना के इंद्रधनुषी रंग भरता है। कोमल करों में विश्वास के साथ लेखनी और तूलिका दे सर्जना-पथ पर कुछ नया रचने-बुनने को प्रेरित करता है। उसके पास आने वाले बच्चे कोरे कागज या कोरी स्लेट नहीं होते जिस पर वह अपने विचार, अपनी इबारत अंकित करता हो। बच्चे खाली घड़ा भी नहीं होते जिन्हें वह अपने ज्ञान से लबालब भर दे। और बच्चे नहीं होते हैं कच्ची मिट्टी के लोंदे जिन्हें वह मनचाहा आकार देता हो या उनके मन की नम उर्वरा जमीन पर अपने सिद्धांतों की पौध रोप देता हो। वह जानता है कि दुनिया के सभी बच्चे अनंत संभावनाओं से भरे हुए बीज हैं जिनके हृदय में शिक्षा, साहित्य, कृषि-कर्म, ललित कला, सामाजिकता एवं मानवीय मूल्य समाहित होते हैं। शिक्षक उनके अन्तःमन में समाहित गुणों को उद्घाटित और प्रकाशित करने में सहायता करता है। बीज से विशाल वृक्ष बनने हेतु आवश्यक अनुकूल परिवेश, परिस्थितियाँ एवं पोषण प्रदान करता है। बच्चों की जन्मजात प्रतिभाओं को शिक्षण-प्रशिक्षण के द्वारा परिमार्जित कर लोक हितैषी और मानवीय मूल्यों में विश्वास से परिपूर्ण एक व्यक्तित्व के रूप में समाज के हाथों में सौंपता है जिसके हृदय में करुणा, समानता, न्याय, विश्वास, सहानुभूति, कुटुम्ब भाव, समानता, सहकारिता, लोकतांत्रिकता एवं सामूहिकता और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना हिलोरें लेती है। यह सत्कर्म केवल एक शिक्षक ही करता है, कर सकता है। वह पीढ़ियों का निर्माता है। वह समाज का सिरजनहार है।

विश्व शिक्षक दिवस उन उम्मीद जगाते शिक्षकों के मान-सम्मान का दिन है जो लोकैषणा से परे ध्येय-पथ पर निरन्तर गतिशील हैं। प्रसिद्धिपरांगमुख हो शैक्षिक फलक पर सर्जना के मोहक रंग भर रहे हैं, आकर्षक सितारे टाँक रहे हैं। जो भारत के उपवन में सुवास बनकर बिखरे हुए है।

श्रेष्ठ शिक्षक केवल पाठ्यक्रम को ही नहीं पढ़ते-पढ़ाते बल्कि वे बच्चों के मन को पढ़ उनके हृदय में गहरे उतरते हैं। उनकी प्रकृति एवं स्वभाव को समझते

हैं। कोमल सुवासित सुमनों को प्रेम, सद्भाव और आत्मीयता के शीतल जल से सिंचन करते हैं। ध्यातव्य है, बच्चे को मिली डाँट-फटकार उसे विद्रोही, बागी और कुंठित बना देती है या हीन भावना से ग्रस्त एक मनोरोगी। श्रेष्ठ शिक्षक बच्चों के स्वभाव एवं प्रकृति से न केवल परिचित होते हैं बल्कि विपरीत आचरण करने पर कारणों की तह तक जाकर उपयुक्त उपचार तलाशते हैं। यहाँ पर मैं एक प्रसंग साझा करता हूँ। एक बार एक सज्जन गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर से भेंट करने शान्ति निकेतन गये। उन्होंने एक वृक्ष के नीचे गुरुदेव को चिन्तामग्न बैठे और लगभग 15-20 बच्चों को खेलते, पेड़ पर चढ़ते, रोते-हँसते-खिलखिलाते और उछल-कूद करते देखा। पर एक बच्चा पेड़ के नीचे चुपचाप गुमसुम बैठा था। उस सज्जन ने जाते ही गुरुदेव से कहा कि निश्चित रूप से आप पेड़ पर चढ़े बच्चों से परेशान एवं चिन्तित हैं। गुरुदेव रवीन्द्र ने उत्तर दिया कि मैं पेड़ पर चढ़े बच्चों से नहीं बल्कि पेड़ के नीचे बैठे बच्चे को लेकर चिन्तित हूँ, क्योंकि पेड़ पर चढ़ना, उछल-कूद करना बच्चों की स्वाभाविक प्रकृति है। मैं यहाँ लिखते हुए हर्षित हूँ कि आज ऐसे रचनाधर्मी, संवेदनशील एवं बालहितैषी शिक्षकों की एक लम्बी शृंखला विद्यमान है जो बच्चों की प्रकृति और मनोभावों को समझते और उनके बचपन को बचाये रखते हुए उनमें साहस, शील, शौर्य, निर्भयता, संवेदना, सह-अस्तित्व, प्रेम, करुणा आदि मानवीय सद् प्रवृत्तियों को जाग्रत किये हुए हैं। जिनमें अपने परिवेश को समझने, समस्याओं को खोजने एवं उनके समाधान करने की समझ विकसित होती है। कठिनाइयों से जूझने एवं उलझनों को सुलझाने, निर्णय लेने, कल्पना एवं तर्क शक्ति की क्षमता का विकास होता है। सौन्दर्य बोध एवं रचनात्मक संवेदना जाग्रत होती है। उनके परिवार और परिवेश में घट रही घटनाओं, प्राकृतिक बदलावों, सामाजिक ताना-बाना, तीज-त्योहारों को समझने-सहेजने, अवलोकन करने और कुछ नया खोजबीन करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। जिनकी साँसों में अपनी माटी की महक बसी है और आँखों में श्रम से उपजा सौन्दर्यबोध।

उल्लेखनीय है यूनेस्को एवं अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की 1966 में हुई बैठक में शिक्षकों के अधिकारों, जिम्मेदारियों, रोजगार की संभावनाओं और शिक्षा के भविष्य पर विस्तृत चर्चा करते हुए कुछ मार्गदर्शक बिंदु तय किए गए थे जिसमें शिक्षकों के हित में वैश्विक आयोजन करने के सुझाव थे। डॉ. गुलाब चौरसिया (सदस्य, अंतरराष्ट्रीय शिक्षा) के प्रयासों से वर्ष 1994 में 5 अक्टूबर को विश्व शिक्षक दिवस के रूप में मनाना प्रारंभ हुआ है और यह परंपरा संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वावधान में संपूर्ण विश्व में 100 से अधिक देशों में अद्यतन जारी है, जिसमें यूनिसेफ, यूएनडीपी, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और अंतराराष्ट्रीय शिक्षा द्वारा संयुक्त रूप से वैश्विक आयोजन करके सेवारत और सेवानिवृत्त ऐसे शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है जिन्होंने समाज रचना में पहल करते हुए अभूतपूर्व योगदान दिया हो। 5 अक्टूबर को विश्व शिक्षक दिवस के आयोजन का यह भी उद्देश्य है कि लोग शिक्षकों के काम को न केवल समझें बल्कि छात्रों एवं समाज के विकास में शिक्षकों की मदद भी कर सकें।

विश्व शिक्षक दिवस उन तपस्वी शिक्षक-शिक्षिकाओं के काम को स्मरण करने एवं सम्मान देने का दिन है जो व्यक्ति निर्माण की साधना में अविरत साधनारत हैं। छत्तीसगढ़ से ईश्वरी सिन्हा (बालोद) बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति पर काम कर रहे है तो सीमांचल त्रिपाठी (सूरजपुर) ने विद्यालय को बस्तामुक्त कर बच्चो को बस्ता ढोने से मुक्ति देने की सार्थक पहल की है। आसिया फारूकी (फतेहपुर) खंडहर और कूड़ा डंपिग परिसर वाले स्कूल को एकल शिक्षिका होते हुए भी प्रदेश का आदर्श विद्यालय बना देती हैं। महेशचन्द्र पुनेठा (उत्तराखंड) दीवार पत्रिका से बच्चों को जोड़कर न केवल पढ़ने-लिखने की संस्कृति को पोषण देते हैं बल्कि बच्चे सामूहिकता, लोकतांत्रिकता, परस्पर विश्वास जैसे भाव भी अनायास सीख जाते हैं। रामकिशोर पांडेय (बांदा) बाल संसद एवं मीना मंच के माध्यम से बच्चों में लोकतत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास पैदाकर विद्यालय को लैंगिक भेदभाव से मुक्त करते हैं। शाहजहाँपुर के प्रदीप राजपूत विज्ञान को परिवेशीय कबाड़ वस्तुओं से उपकरण तैयार कर बच्चों को विज्ञान की अवधारणाएँ स्पष्ट करते हुए उनमें वैज्ञानिक चेतना का विकास कर रहे हैं। मनोज वार्ष्णेय बदायूं 103 दिन तक नामांकन के सापेक्ष शत-प्रतिशत छात्र उपस्थिति का रिकार्ड बनाते हैं। कमलेश पांडेय वाराणसी कक्षा छठी में संभाव्य नामांकन 4 का अनुमान लगा 3-4 किमी की परिधि के प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाकर नव प्रवेश 75 कर लेते हैं। पंकज वार्ष्णेय विद्यालय के बंजर परिसर में दो हजार पौधे रोप कर हरा-भरा बनाते हैं तो हरिश्चंद्र सक्सेना कोरोना काल में 25 से अधिक आनलाइन प्रतियोगिताएँ कर 2000 से अधिक शिक्षक-शिक्षिकाओं को पाठ्यक्रम से जोड़े रखकर शिक्षा को गति देते हैं। देवेन्द्र देवांगन अबूझमाड़ के सघन वन प्रान्तर में घूम-घूम कर समुदाय को शिक्षा से परिचित कराते हुए 'मोटर साइकिल वाले गुरु जी' नाम से पहचाने जाने लगते हैं। राजनाथ द्विवेदी अपने जेब से धन खर्च कर मजदूरों के बच्चों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ते हैं। राजकुमार शर्मा (चित्रकूट) और अरविन्द गुप्ता (छत्तीसगढ़) अपने सैकड़ों टीएलएम से बच्चों के सम्मुख पाठों को सहज एवं सुग्राह्य बना देते हैं। रामसेवी चौहान ग्वालियर नववधुओं को रोजगारोन्मुख बनाती हुई उनको सिलाई-कढाई के प्रशिक्षण से जोड़ती हैं तो बेगूसराय(बिहार) के संत कुमार साहनी ने विद्यालय जमीन को अतिक्रमण से मुक्त कराकर बच्चों को लुप्त हो रही बिहारी संस्कृति को समझने हेतु संग्रहालय की स्थापना की तो विजय जैन (राजस्थान) एवं विजय बालासहेब पालघर (महाराष्ट्र) वनवासी बच्चों के साथ काम करते हुए न केवल उनकी भाषा-बोली को सीखते-अपनाते हैं बल्कि स्वयं को वनवासी संस्कारों मे ढालकर बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़कर उनके जीवन में समझ का उजाला भर देते हैं। नन्हेराम पटेल (नरसिंहपुर) विद्यालय में मूलभूत संसाधनों की स्थापना हेतु पत्नी के जेवर-गहने भी बेचकर धन जुटाते हैं तो प्रतापगढ़ के मो. फरहीम अपनी पूरी जमा पूँजी ही विद्यालय विकास को भेंट कर देते हैं। टीकमगढ़ के आशाराम कुशवहा विद्यालय परिसर के निस्प्रयोज्य उथले तालाब को बच्चों के सहयोग से चार सालों में पाटकर खेल का मैदान बना देते हैं तो वहीं सिवनी के विष्णु प्रसाद डेहरिया शिक्षण की सहज शैली विकसित कर बच्चों एवं समुदाय के प्रिय बन जाते हैं।

विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर हम विश्वास करें कि बच्चों के अंदर ऐसे नैतिक एवं सामाजिक मूल्य विकसित होंगे तब हम एक बेहतर दुनिया रच पाने में समर्थ-सफल होंगे जहाँ लिंग, जाति, रंग, नस्ल, देश के भेद नहीं होंगे। होगा केवल परस्पर विश्वास, समता, समरसता, समभाव, प्रेम, करुणा, अहिंसा और सह-अस्तित्व का उदात्त भाव। हर हाथ में हुनर, आँखों में चमक, मन में आत्मविश्वास और चेहरे पर खिलखिलाती हँसी। और यह सम्भव हो सकेगा श्रेष्ठ शिक्षकों की सतत शैक्षिक साधना से।

सम्प्रति - लेखक भाषा शिक्षक हैं और विद्यालयों को आनन्दघर बनाने के अभियान पर काम कर रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक बदलावों, आनन्ददायी शिक्षण एवं नवाचारी मुद्दों पर सतत लेखन एवं प्रयोग ।

सम्पर्क - बाँदा, उप्र,

ईमेलः pramodmalay123@gmail.com

शिक्षा के क्षेत्र में डुडीवाला किशनपुरा गाँव की प्रेरणादायक पहल

हरपाल आर्य

हरियाणा में एक पुरानी कहावत प्रचलित है गाम राम होता है। इस कहावत को चरखी दादरी जिले का गाँव डुडीवाला किशनपुरा पूरी तरह से चरितार्थ करने में जुटा हुआ है। एकदम से पूरे गाँव ने मिलकर शैक्षणिक परिदृश्य को बदल कर रख दिया। महँगी होती शिक्षा के कारण कुछ लोग सिर्फ परिणाम के बारे में अभी सोच ही रहे हैं। परंतु डुडीवाला किशनपुरा के ग्रामीणों ने महँगी होती शिक्षा के नतीजों को भाँपते हुए इस से छुटकारा पाने के लिए जी जान से कोशिश शुरू की। जहाँ विश्वव्यापी महामारी कोरोना ने सबके लिए मुसीबतें खड़ी की हैं, वहीं इस गाँव के ग्रामीणों ने इस काल को भी सकारात्मक सोच के दम पर अपने पक्ष में कर लिया है।

चरखी दादरी जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गाँव डुडीवाला किशनपुरा में नवंबर 2019 में समिति के सूत्रधार रहे राजकमल जांगड़ा व मुकेश शर्मा ने युवाओं के साथ बैठक कर शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए केंद्रित श्री सोमनाथ जनकल्याण समिति का गठन किया। स्वास्थ्य को लेकर गाँव में निरंतर अभियान चलाने वाली समिति ने 7 जून 2020 को आयोजित बैठक में सरकारी स्कूल में दाखिले को लेकर प्रस्ताव सभी ग्रामीणों के सामने रखा। बैठक में फैसला लिया गया कि मिशन सरकारी स्कूल अभियान चलाया जाएगा और गाँव के सभी

बच्चे सरकारी स्कूल में जाएँगे। इसको धरातल पर सफल बनाने के लिए समिति के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने अपने बच्चों का दाखिला तुरंत गाँव के सरकारी स्कूल में करवा दिया। अगली बैठक में अभिभावकों को समिति की तरफ से गाँव में निजी विद्यालयों की तर्ज पर सभी सुविधाएँ उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया गया। परंतु कुछ अभिभावकों को छोड़कर ज्यादातर अभिभावक अभी निजी स्कूलों का मोह नहीं त्याग पाए। अभिभावकों का मन बदलने के लिए समिति के सदस्यों ने भी पूरी तरह से कमर कस ली थी। सदस्यों ने घर-घर जाकर स्कूल जाने वाले बच्चों का सर्वे किया। इसके पश्चात गाँव में आम सभा का आयोजन करके सर्वे रिपोर्ट सभी ग्रामीणों के सामने रखी। सर्वे रिपोर्ट में निकल कर आया कि लगभग एक करोड़ सालाना राशि शिक्षा के नाम पर ग्रामीण खर्च कर रहे हैं।

समिति ने प्रस्ताव रखा कि पूरा गाँव मिलकर इस एक करोड़ रुपये को एक मुश्त सरकारी स्कूल पर खर्च कर निजी स्कूलों की तरह संसाधन जुटा ले तो आने वाली पीढ़ी के लिए भी शिक्षा के बेहतर प्रबंध किये जा सकते हैं। समिति द्वारा तथ्यों के आधार रखी गई बात पर ग्रामीणों ने गहराई से विचार किया और ध्वनि-मत से सभी ने सरकारी स्कूल में दाखिले के लिए सहमति जताई। सर्वे में गाँव से कक्षा 1 से 12 तक स्कूल जाने वालों की संख्या 655 निकल कर आयी। पहली से आठवीं तक के छात्रों की संख्या 413 है। चूंकि गाँव में केवल मिडल तक स्कूल है, इसलिए वर्तमान में समिति का प्रयास मिडल तक

समिति के पदाधिकारियों द्वारा किये गए प्रयास फलीभूत हुए हैं और मिशन सरकारी स्कूल सही दिशा में अग्रसर है। समिति आने वाले समय में इस मिशन को और आगे बढ़ाने का प्रयास करेगी। जल्द ही यह प्रयास रहेगा कि डुडीवाला किशनपुरा हरियाणा का पहला ऐसा गाँव होगा जिसके सभी छात्र सरकारी स्कूल में पढ़ते हों। इस अभियान में गाँव के सभी वर्गों का विशेष योगदान रहा।

बुज़ुर्गों ने दिया आशीर्वाद

गाँव के युवाओं द्वारा चलाये गए दाखिला अभियान में सफलता मिलने के पश्चात गाँव के बुज़ुर्गों ने मोर्चा सँभाला। गाँव के सरकारी स्कूल को कुछ समय पहले ही मिडल स्कूल का दर्जा प्राप्त हुआ था। विद्यालय में संसाधनों के नाम पर केवल 7 कमरे हैं जिनमें से 2 जर्जर हालत में हैं। ग्रामीणों ने इसके लिए प्रशासन की तरफ हाथ न फैलाकर खुद ही संसाधन बढ़ाने का फैसला लिया और एक के बाद एक कमरों के निर्माण की घोषणा करते हुए कुल 11 कमरों का निर्माण कार्य अपने स्तर पर शुरू करवा दिया। कमरों के निर्माण हेतु 12 अगस्त को शिलान्यास कार्यक्रम रखा गया जिसमें स्थानीय विधायक एवं पशुधन विकास बोर्ड के चेयरमैन सोमबीर सांगवान, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी चरखी दादरी रामअवतार शर्मा व जिला मौलिक शिक्षा अधिकरी वीरेंद्र मलिक की उपस्थिति में भूमिपूजन किया गया और कमरों की नींव रखी गई। कमरों का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है और जल्द ही पूरा हो जाएगा।

मिशन सरकारी स्कूल के सूत्रधार रहे मा. हरिओम जांगड़ा ने अभियान के दौरान आई परिस्थितियों के बारे में बातचीत के दौरान बताया कि समाज में निजी स्कूलों के मोह में फँसे अभिभावकों को एकदम से सरकारी विद्यालय की तरफ मोड़ना बहुत मुश्किलों भरा रहा। शुरुआत में मिशन सरकारी स्कूल को लेकर मजाक उड़ाया गया और इसको सिर्फ सोशल मीडिया के लिए पब्लिसिटी स्टंट बताया गया। परंतु इन चीज़ों की परवाह न करते हुए समिति सदस्य निरंतर अभिभावकों से मिलकर उनको समझाते रहे और आश्वस्त करते रहे कि आने वाले समय में किसी प्रकार का अभाव आपके बच्चे को सरकारी स्कूल में नहीं झेलना पड़ेगा। हरिओम जांगड़ा ने गाँव के मौजिज व्यक्तियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि निजी स्कूलों से एसएलसी को लेकर आई परेशानियों से अभिभावकों को निजात दिलवाई। समिति अब शिक्षा विभाग से उम्मीद रखती है कि जल्द ही विभाग स्कूल को बारहवीं तक अपग्रेड करते हुए ग्रामीणों की भावनाओं का सम्मान करे।

जेबीटी
राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला
काकड़ौली हुक्मी ,चरखी दादरी, हरियाणा

के सभी बच्चों का दाखिला गाँव के स्कूल में करना हैं। इसका परिणाम भी निकल कर आया है। मई 2020 तक राजकीय विद्यालय कक्षा 1 से 8 तक कुल छात्र संख्या 103 थी, वही 31 अगस्त तक 312 तक पहुँच चुकी है। इसके अतिरिक्त 60 प्रोविजनल एडमिशन भी हो चुके हैं। समिति इनकी एसएलसी के लिए प्रयासरत है और जल्द ही इनकी दाखिला प्रक्रिया पूरी हो जाएगी।

कठिन थी डगर-

श्री सोमनाथ जनकल्याण समिति के प्रधान राजकमल ने विचार साँझा करते हुए बताया कि मिशन सरकारी स्कूल सुनने में जितना सहज लगता है उसके विपरीत इसको धरातल पर परिलक्षित करना उतना ही असहज रहा है। अपने बच्चों के बेहतर भविष्य की उम्मीद में अपनी गाढ़ी कमाई को खर्च कर रहे अभिभावकों को सरकारी विद्यालय के लिए मानसिक रूप से तैयार करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। अन्ततः

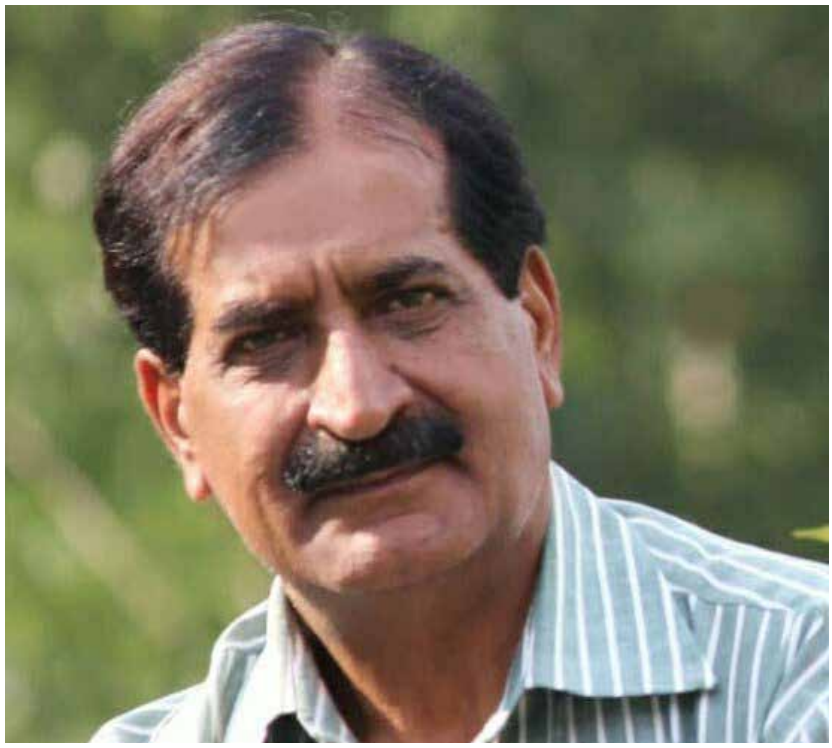

विद्यालय भवन से राष्ट्रपति भवन तक का सफ़र

जितेंदर राठौड़

आज समाज के संवर्धन एवं विकास में एक शिक्षक की भूमिका बड़ी अहम होती है। शिक्षा अंतर्निहित ज्योति की उपलब्धि के लिए विकासशील आत्मा की प्रेरणादायिनी शक्ति होती है। यह बच्चे के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को व्यक्त करती है। बीज रूप में जो विद्यमान है, उसे खोलना ही शिक्षा है। यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा अपनी वास्तविक योग्यताओं को बाह्य रूप प्रदान करता है। इस प्रक्रिया की मूल कड़ी है शिक्षक। एक सच्चा शिक्षक न जाने कितनी भूमिकाओं को निभाते हुए उक्त गुणों के पालन हेतु सदैव प्रयासरत रहता है। ऐसे ही शिक्षक हैं गुलशन कुमार, जिनका समग्र जीवन समाज के लिए प्रेरणा पुंज व प्रेरणा स्रोत बना। श्री गुलशन कुमार जी का जन्म 1958 में रोहतक में हुआ। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा जींद से प्राप्त की। बचपन से ही आप विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। पाँचवीं कक्षा से ही आपने प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को कागज पर उकेरना प्रारंभ कर दिया था। रंगों का चितेरा बनने की इसी ललक ने आपको गवर्नमेंट स्कूल ऑफ़ आर्ट्स, रोहतक में ला खड़ा किया जहाँ से आपने आर्ट एंड क्राफ्ट टीचर ट्रेनिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। विद्यार्थी जीवन में अंतर्मन की सुखद अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हेतु आपने जिस कला का सहारा लिया उसे ही सेवा-भाव से अपनाते हुए आजीविका का साधन भी बनाया। 1977 में आपने शिक्षा विभाग में जिला करनाल में कला अध्यापक के रूप में कार्य ग्रहण किया। अब आपके सामने लक्ष्य अपनी योग्यता और क्षमताओं को अपने बच्चों के अंदर उतारना था। बाल्यकाल से ही कला के प्रति रुचि, लगाव व निष्ठा के बल पर जब आपने छात्रों का मार्गदर्शन किया तो आपके छात्रों ने सफलता के नए आयाम गढ़ दिए। उन्होंने खंड, जिला एवं राज्य स्तर पर अनेक उपलब्धियाँ अपने नाम कर दीं। पेपर कटिंग, क्ले मॉडलिंग, स्प्रे वर्क, पेंटिंग आदि क्षेत्रों में आपकी विशेष रुचि और दक्षता रही जिसके कारण स्कूल ही नहीं, कॉलेज स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में आपको जज के रूप में आमंत्रित किया गया। शिक्षेतर गतिविधियों में अपना योगदान देने के लिए आप 1986 ईस्वी में देशभक्त, बहादुर सक्रिय, अग्रगामी तथा दूरदर्शी नागरिकों का निर्माण करने वाली संस्था भारत स्काउट एवं गाइड का हिस्सा बन गए। इस संस्था की मूल संवेदना को आत्मसात करते हुए आपने बेसिक, एचडब्ल्यूबी, एएलटी तथा एलटी का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपकी मेहनत और कर्तव्य परायणता के कारण शीघ्र ही आप की गिनती कुशल, पारंगत एवं अग्रिम पंक्ति के प्रशिक्षकों में होने लगी। आपने अपने शिक्षक दायित्व को बखूबी निभाते हुए जिला स्काउट संगठन आयुक्त जींद के पद पर लगभग 10 वर्षों तक कार्य किया। इस दौरान आपके नेतृत्व में जिला जींद ने जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई। आपके कुशल नेतृत्व में जिला जींद के अनेक स्काउट्स ने महामहिम राष्ट्रपति और राज्यपाल के हाथों अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। शिक्षक के रूप में आप दोहरा दायित्व निभा रहे थे। एक तरफ आप कक्षा कक्ष में बच्चों को रंगों के साथ खेलना सिखा रहे थे, तो वहीं दूसरी तरफ स्काउटिंग के माध्यम से बच्चों के अंदर अच्छे नागरिक के गुण विकसित कर रहे थे। स्काउटिंग के क्षेत्र में आपका योगदान सराहनीय रहा। स्काउटिंग के माध्यम से आपने बच्चों को रेलवे स्टेशन व बस स्टैंड पर गर्मियों में जल सेवा करने के लिए प्रेरित किया ,पर्यावरण को बचाने के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया, समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए आपने अनेक बार रैलियों एवं नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया। जब भी प्रशासन खेल-कूद उत्सव या किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करता था,

तो आप और आपके बच्चों का सेवा-भाव देखने योग्य बनता था। जिला स्तर पर आपकी सेवाओं को देखते हुए अनेक बार जिला शिक्षा अधिकारी, जिला प्रशासन एवं हरियाणा सरकार के विभिन्न मंत्रियों के द्वारा आप को सम्मानित किया गया। राज्य मुख्यालय भारत स्काउट गाइड की ओर से आयोजित किए गए कैंपों में शिमला, तारादेवी, मणिकरण के अलावा आठ राष्ट्रीय जम्बूरियों में स्काउट के साथ भाग लिया व जिले का प्रतिनिधित्व किया। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेंचर कैम्पों के सफल आयोजन में आप की अहम भूमिका रही। स्काउटिंग उपलब्धियों के फलस्वरूप आपको मैडल ऑफ मेरिट, लॉन्ग सर्विस डेकोरेशन अवार्ड, बार टू मेडल ऑफ मेरिट एवं उच्च प्रशिक्षण लीडर ट्रेनर अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपको शिक्षा कार्य में लगाव, सेवा-भाव एवं अन्य प्राप्त उपलब्धियों के फलस्वरूप वर्ष 2003 में राज्यपाल बाबू परमानंद जी द्वारा राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2007 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड मिलना एक शिक्षक के लिए बहुत गर्व की बात है। अपने शिक्षक धर्म की मूल पृष्ठभूमि के आलोक में अपने दायित्व एवं कर्तव्य का निर्वहन करते हुए अप्रैल 2018 को शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए। निश्चित तौर पर एक शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में आपका जीवन समाज के लिए सदैव ही प्रेरणापुंज बनकर आलोकित करता रहेगा।

प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
आरोही मॉडल स्कूल, रामगढ पाण्डवा, कलायत (कैथल)

कोरोना काल में चमकी शिवम की कला

कोरोना काल दुनिया के लिए एक गंभीर समय है। दुनिया भर में इसका प्रभाव नकारात्मक रहा है। लेकिन कवियों एवं चित्रकारों के लिए यह एक सृजनात्मक दौर है। देश में ऐसे अनगिनत लोग हैं जो कोरोना काल की चिंता करते हैं और अपने तरीके से इसको दुनिया के समकक्ष रख रहें है। इसी में एक नाम है शिवम सुरेश कुमार का। तेरह साल के शिवम ने कोरोना के इस भयावह संकट को अपनी तूलिकाओं में सहेज रखा है।

तेरह वर्षीय शिवम हिसार जिले के लुदास गाँव के लार्ड शिवा स्कूल में कक्षा छह का विद्यार्थी हैं। शिवम ने लॉक डाउन के समय में अपनी चित्रकला से नई ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। कला शिवम का विषय नहीं है लेकिन कोरोना घटना ने उसको इस तरफ खींच लिया। खाली समय में कूची उठ गई तो फिर हाथों में ठहराव नहीं आया। अपनी लाजवाब चित्रकारी से शिवम सुरेश ने 22 मार्च, 2020 से लेकर अब तक दो सौ से ज्यादा पेंटिंग्स बना डाली हैं। वह किसी न किसी विषय पर पेंटिंग प्रतिदिन बना रहा है।

शिवम की माँ बिदामो देवी जो आकाशवाणी हिसार में उद्घोषक के पद पर कार्यरत है, ने बताया कि शिवम के द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स अखबारों और पत्रिकाओं के संपादकीय पृष्ठों के आलेखों के साथ प्रकाशित हो रही हैं। इनकी पेंटिंग्स की खास बात यह है कि ये विषय के अनुकूल चित्रांकन करने में सक्षम हैं। शिवम ने चित्रकारी सीखने के लिए कोई औपचारिक ट्रेनिंग भी नहीं ली है।

शिवम के पिता सुरेश कुमार नांदवाल कहते हैं कि कोरोना से कुछ माह पहले बेटे शिवम ने एक बार स्कूल की छुट्टी पर कागज पर होम वर्क के दौरान एक पेंटिंग बनाई जो दैनिक भास्कर अखबार में छपी। उसके बाद उन्होंने बेटे की पेंटिंग और उसके रुझान को देखते हुए अपने दोनों बेटों को पेंटिंग के लिए आवश्यक सामान लाकर दिया। इसके बाद दोनों के हुनर ने अपने जौहर दिखाने शुरू कर दिए। कोरोना के दौरान स्कूल बंद होने के बाद तो ये प्रतिदिन अपने मामा के लेखों के लिए पेंटिंग्स बनाने लगे। यही नहीं आस-पड़ोस के बच्चों ने भी इनकी तरह पेंटिंग्स सीखने के प्रयास करना शुरू कर दिया। उनके पिता ने बताया कि पेंटिंग की तरफ रुझान को देखते हुए वह दोनों को आगे बढ़ते देखना चाहते हैं। वे कहते हैं कि शिवम ने महज छह महीने में यह सब सीखा है और सीखने के लिए उन्होंने यूट्यूब एवम गूगल का सहारा लिया। अपनी छोटी सी उम्र में ही आदित्य-शिवम ने कई प्रदर्शनियों में भी हिस्सा लिया है। पिता बताते हैं कि आदित्य-शिवम कैनवस पेंटिंग्स, ऑइल पेंटिंग्स, चारकोल पेंटिंग्स, हाइपर रियलिस्टिक पेंटिंग्स और पोर्ट्रेट में भी अच्छी कमांड रखते हैं। शिवम-आदित्य ने बातचीत में कहा कि वे अपनी पेंटिंग के जरिये पर्यावरण पर खास फोकस करते है। अब पेंटिंग करना उन दोनों का शौक बन गया है। वे दोनों पूरी दुनिया में पेंटिंग के जरिये देश के साथ माँ बाप का नाम रोशन करना चाहते हैं।

- डॉ सत्यवान सौरभ,
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, दिल्ली यूनिवर्सिटी
कवि, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

वर्ष की शुरुआत में ही नोवल कोरोना वायरस के द्वारा उत्पन्न कोविड-19 महामारी एक समस्या बनकर सामने आई हुई है। इस दौर में शिक्षा भी प्रभावित हुई है। विद्यार्थी विद्यालय नहीं आ पा रहे तो ऐसी स्थिति में अध्यापकों द्वारा उन्हें विभिन्न नवाचारी विधियों से पढ़ा पाना एक बहुत बड़ी चुनौती बना हुआ है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को रुचिकर तरीके से पढ़ाना बिना वीडियो के संभव नहीं हो पा रहा था। वीडियो बनाने में हर कोई अध्यापक एक समान कुशल नही है। खासकर मेरे विद्यार्थी तो मुझसे पढ़ते हुए मेरी शक्ल भी देखना चाहते थे। वे चाहते थे कि सर पहले की ही तरह उन्हें विभिन्न विज्ञान गतिविधियाँ करवायें। क्योंकि उनका घर में उतना दिल नहीं लग रहा है। ऐसी स्थिति में उनको नवाचारी विज्ञान गतिविधियाँ वीडियो के जरिए करवाई गईं जिनका वर्णन निम्नलिखित है-

1.बुलबुले में बुलबुला, उनमें एक और बुलबुला-

बच्चों को साबुन के बुलबुले बनाने का बहुत शौक होता है। वे बहुत प्रसन्न होते हैं जब वे साबुन के बुलबुले बनते हुए देखते हैं। वीडियो बनाने से एक दिन पहले उन्हें बताया गया कि हम पहले बुलबुला बनाएँगे फिर उसके अंदर एक बुलबुला और बनाएँगे। आइये देखते हैं हम कितने बुलबुले एक के अंदर एक बना सकते हैं? इसके लिए बर्तन माँजने वाला लिक्विड सोप व ग्लिसरीन चाहिये। किसी कटोरी में दो चम्मच तरल साबुन का घोल, एक चम्मच ग्लिसरीन व एक चम्मच पानी डालकर जो मिश्रण तैयार होता है। उस मिश्रण की 10-15 बूँदें टेबल की चिकनी सतह पर फैला देते हैं। कोल्ड ड्रिंक पीने वाला एक स्ट्रा लेते हैं। उसके एक सिरे को विलयन में डुबोकर दूसरी तरफ से फूँक मारकर टेबल पर अर्द्ध-चंद्राकर एक बड़ा बुलबुला तैयार करते हैं। फिर पाइप को दोबारा से डुबोकर उस बुलबुले के अंदर एक और बुलबुला तैयार करते हैं। इस तरह से हम बुलबुलों के भीतर कई सारे बुलबुले बना सकते हैं। इस गतिविधि को करके बच्चे बहुत ही आनंद लेते हैं। बहुत से बच्चों ने इस बुलबुले बनाने वाली गतिविधि को करके देखा। साथ ही अपने बुलबुलों की फोटो सभी के साथ शेयर कीं।

2.बाल्टी में बड़े-बड़े बुलबुले

पानी से भरी हुई बाल्टी में एक मग उल्टा करके दबाकर नीचे तक ले जाते हैं। जैसे ही हम मग को हल्का सा तिरछा करते हैं तो बड़े-बड़े हवा के बुलबुले निकलते हैं। बच्चे अक्सर यह खेल खेलते रहते हैं परंतु उन्हें नहीं पता कि ऐसा क्यों होता है? जब मग को उल्टा करके पानी में दबाया जाता है तो मग में जो हवा होती है वह भी मग के साथ ही पानी के भीतर चली जाती है। परंतु रहती वह मग के भीतर ही है। जैसे ही हम मग को थोड़ा सा तिरछा करते हैं तो हवा तेजी से बाहर निकलती है। जो

बड़े-बड़े बुलबुले बनाती है।जब बुलबुले सतह पर आकर फूटते हैं तो उनमें से धप-धप की आवाज भी आती है। इस प्रकार बच्चों ने यह जाना कि असल में हम जिस मग को खाली कहते हैं वह खाली नहीं है। उसमें वायु होती है। क्योंकि वायु पानी में तीव्रता से नहीं घुलती इसलिए वह हल्की होने के कारण ऊपर की तरफ उठ कर बाहर निकल जाती है। फलस्वरूप बड़े-बड़े बुलबुले बनते हैं। इसका वीडियो देखकर बच्चे बहुत खुश हुए और उन्होंने इस गतिविधि को करके देखा और वीडियो बनाकर भेजे।

3.आखिर सिक्का कैसे गायब हुआ?

ये क्या? सिक्के पर काँच का टम्बलर (गिलास) रखा और सिक्का गायब! जैसे ही गिलास को उठाया तो सिक्का वापस आ जाता है। बच्चे हैरान थे, ये कैसे हुआ? कुछ कह रहे थे गिलास में चुम्बक लगा है, सेलो टेप या गोंद लगा है। जब बच्चों को इसके पीछे का विज्ञान व ट्रिक पता लगी तो सब हँसे। बहुत से बच्चों ने इस गतिविधि को बना कर देखा।

हमारी दोनों आँखे एक रंग को एक जैसे ही पहचानती हैं। इसको बनाने के लिए गिलास के नीचे उसी रंग का कागज़ चिपकाया जाता है जिस रंग का कागज नीचे बिछाया गया है। जब गिलास को सिक्के के ऊपर

रखा जाता है तो सिक्का गिलास के नीचे उसके मुँह पर चिपकाए गए वृत्ताकार कागज के नीचे आ जाता है। कागज का रंग समान होता है इसलिए देखने वाले को पता ही नहीं चलता। थोड़ा सा ट्रिकी बनाने के लिए गिलास को कागज़ के बेलनाकार आवरण से ढका जाता है।

4 .मधुमक्खियाँ हमारी अच्छी दोस्त-

विद्यार्थियों का मधुमखियों में रुचि लेने का पता तब लगा जब मैने ग्रुप में एक फोटो दिखाई जिसमे मैंने अपने हाथ पर रानी मधुमक्खी को बैठाया हुआ था। उनकी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए एक वीडियो मधुमक्खियों व मनुष्यों की सहभागिता पर बनाया गया।

कौन होगा जिसे शहद अच्छा न लगता हो? शहद एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जिसे हर कोई चाव से खाता है। शहद हमें शहद की मक्खियों से प्राप्त होता है।

मधुमक्खी कीट वर्ग का प्राणी है। मधुमक्खी से मधु यानी शहद प्राप्त होता है। मधुमक्खियाँ छत्ते बनाकर रहती हैं। मधुमक्खियाँ यह छत्ता मोम से बनाती हैं। इनके वंश का नाम एपिस है, जिसमें 7 जातियाँ एवं 44 उपजातियाँ हैं। मधुमक्खी नृत्य के माध्यम से अपने परिवार के सदस्यों की पहचान करती हैं। जंतु जगत में मधुमक्खी 'आर्थोपोडा' संघ का कीट है। विश्व में मधुमक्खी की मुख्य पाँच प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें चार प्रजातियाँ भारत में पाई जाती हैं।

आओ जानें कि मधुमक्खी-पालन कैसे किया जाता है व इससे क्या-क्या प्राप्त होता है। व्यावसायिक स्तर पर मधु उत्पादन के लिए देशी किस्म की मक्खी ऐपिस सेरना इंडिका, (सामान्य भारतीय मक्खी) ऐपिस डोरसेटा, (एक शैल मक्खी) तथा ऐपिस फ्लोरी (लिटिल मक्खी) का प्रयोग करते हैं। एक इटली-मक्खी (ऐपिस मेलीपेफरा) का प्रयोग मधु के उत्पादन को बढ़ाने के लिए किया जाता है। अतः व्यावसायिक मधु उत्पादन में इस मक्खी का प्रायः उपयोग किया जाता है। इटली-मक्खी में मधु एकत्र करने की क्षमता बहुत अधिक होती है। वे डंक भी कम मारती हैं। वे निर्धारित छत्ते में काफी समय तक रहती हैं और प्रजनन तीव्रता से करती हैं। इनकी एक पालतू प्रजाति इटैलियन मधुमक्खी एपिस मेलीफेरा है। वर्तमान

में अपने देश में इसी इटैलियन मधुमक्खी का पालन हो रहा है। मधुमक्खी को एक बॉक्स में पाला जाता है और बॉक्स उस जगह पर स्थापित किए जाते हैं जहाँ पर दूर-दूर तक कोई फूलों वाली फसल जैसे सरसों, कड़ी पत्ता, बाजरा, फलों व सब्जी की फसलें इत्यादि लगाई गई हों या विशाल मात्रा में कीकर, यूकेलिप्टस आदि के पेड़ लगे हों।

मधुमक्खियाँ अपने बक्से से निकलकर दूर-दूर तक फूलों का मकरंद नेक्टर चूस कर लाती हैं। वे अपने साथ उसी फूल के पराग कण भी लाती हैं। मधुमक्खी इन पराग कणों को अपने लारवा को खिलाती हैं। शहद के साथ-साथ मधुमक्खी पालन से बहुत से ऐसे सह-उत्पाद भी मिलते हैं। सह उत्पादों में शहद के अलावा बी-पोलन, कोंब-वैक्स, बी परोपोलिश, रॉयल जेली, क्रिस्टल हनी व बी वेनम का भी उत्पादन होता हैं।

मच्छरों की रोकथाम से सम्बंधित संदेश भी प्रसारित

एक तरफ जहाँ हम कोविड-19 से जूझ रहे हैं वहीं यदि हम मानसून के दिनों व उत्तर मानसून महीनों में 'वेक्टर जनित रोगों' की चपेट में भी आ गए तो ,'करेला

और नीम चढ़ा' जैसी स्थिति हो जाएगी। इसके लिए बच्चों को वीडियो के जरिए मच्छरों के लारवा दिखाए गए और उनसे अपील की गई कि वे अपनी छतों पर जाकर या घर के आँगन में ध्यान से देखें कि क्या किसी डिब्बे, गमले, टायर, टूटी हुई बोतल, पुराने जग, कोई बर्तन, तसला, बाल्टी इत्यादि में वर्षा के कारण पानी तो नहीं इकट्ठा हुआ है। यदि किसी भी पात्र में पानी पाया जाता है तो वह पानी फेंक कर पात्र को उल्टा कर दें। यदि गमले में पानी भरा हुआ है तो उसमें और मिट्टी डाल दें, ताकि मादा एनाफिलीज, एडिस इजिप्ट व अन्य मादा मच्छरों को अपने अंडे देने के लिए पानी न मिल सके।

अच्छा, तो अध्यापक साथियो! आशा रखते हैं कि हम जल्द ही इस कोविड-19 महामारी से निजात पा लेंगे और फिर से हम अपने विद्यार्थियों के साथ विद्यालयों को हँसता-खेलता चमन बना सकेंगे। बेहद अफसोस होता है कि जो विज्ञान गतिविधियाँ हम बच्चों के साथ मिलकर विद्यालय के विज्ञान कक्ष में और उनके कक्षा कक्ष में करवाया करते थे अब हमें वे अंतरजाल के माध्यम से बच्चों तक पहुँचानी पड़ रही हैं। बच्चे आज भी पहले की भाँति अपने पूरे प्रयासों से अपने अध्यापकों के साथ भावनात्मक रुप से जुड़े हुए हैं व शिक्षा पा रहे हैं। लेख से संबंधित सभी वीडियो नीचे दिए लिंक से देखे जा सकते हैं- <https://www.youtube.com/c/dar-shanbaweja>

विज्ञान अध्यापक सह विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड- जगाधरी
जिला- यमुनानगर, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

आप कैसे हैं? आशा है आप सभी स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। आप सभी जानते हैं कि कोरोना महामारी के कारण आप काफी समय से विद्यालय नहीं जा पा रहे। अपने अध्यापकों से आप संपर्क में तो हैं, पर उस तरह नहीं जैसे आप पहले हुआ करते थे। लेकिन आशा है कि जल्दी ही स्थितियाँ बदलेंगी। बड़े बच्चों को तो विशेष हिदायतों के साथ विद्यालयों में बुला लिया गया है। बाकी बच्चे भी जल्दी ही विद्यालयों में आएँगे। लेकिन एक बात का सभी को ध्यान रखना है कि विद्यालय में या घर में, हमें उन सभी निर्देशों का पालन करना है जो अध्यापकों से हमें मिले हैं। कोरोना संक्रमण का खतरा अभी बरकरार है। हमें न केवल स्वयं सुरक्षित रहना है बल्कि अपने आसपास भी जागरूकता फैलानी है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

1.हरियाणा की राजधानी का क्या नाम है?
उत्तर- चंडीगढ़
2.तिरंगे में केसरी रंग किस बात का प्रतीक है?
त्याग व बलिदान का
3.हरियाणा राज्य में कितने जिले हैं?
उत्तर- 22
4 बिहार की राजधानी का नाम क्या है?
उत्तर- पटना
5.किस पशु को 'वनराज' कहा जाता है?
उत्तर- शेर को
6.भारत का राष्ट्रीय पुष्प कौन सा है?
उत्तर- कमल
7.किस नेता को 'बापू' कहा जाता है?
उत्तर- महात्मा गांधी को
8 'भारत कोकिला' किसे कहा जाता है?
उत्तर- सरोजिनी नायडू को

पहेलियाँ

1. श्याम वर्ण पीतांबर कांधे, न वह मुरली धरे हुए।
   बिन मुरली वह तान सुनाता, कलियों से घिरे हुए।
2. कभी ओढ़नी पूरी ओढ़े, कभी ओढ़ता आधी।
   कभी खोलकर पूरा चेहरा, सूत कातती दादी।
3. पहला आधा खट-खट में, बाकी आधा मल-मल में,
   कर देता हूँ नींद हराम, खून चूसना मेरा काम।
4. अजब खेती का देख यह हाल,
   न कोई पता न कोई डाल।
   न बीज डाला न जोता हल,
   नहीं लगता उसमें कोई फल।
   पर जब काटे उसको भाई,
   होती पहले से दूनी-सवाई।
5. कटोरे में कटोरा, बेटा बात से भी गोरा।
6. लग-लग कहे तो ना लगे, मत-मत कहे तो लग जाए।
   कहे पहेली बीरबल, बूझे अकबर शाह।

उत्तर-
1.भँवरा, 2.चंदा , 3.खटमल , 4.बाल, 5.नारियल 6.होंठ

रमेश कुमार सीड़ा,
अंग्रेजी प्रवक्ता,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा,
संप्रति प्रतिनियुक्ति पर चंडीगढ़ में

बापू गांधी

सीधे सादे भोले भाले,
हाथ में रखते सोटी थे।
बापू गांधी बड़े निराले,
पहनते एक लँगोटी थे।

आपस में कभी न लड़ना,
बुरी संगत में नही पड़ना,
बापू गांधी ने सिखलाया,
केवल हमको आगे बढ़ना।

सतपथ पर चलते जाओ,
झूठ कभी भी मत बोलो।
बापू गांधी ने सिखलाया,
जब भी बोलो सच ही बोलो।

हिंसा घृणा को तुम छोड़ो
प्रेमभाव को अपनाओ।
बापू गांधी ने सिखलाया,
सत्य अहिंसा अपनाओ।

- भूपसिंह भारती, शिक्षक,
रा व मा विद्यालय डेरोली अहीर
जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा)

सत्य की डगर

यूँ तो सत्य की डगर,
इतनी नही आसान।
लेकिन जो इस पर चले,
बनता वही महान।

पग-पग पर आती है बाधा,
बन्धु भी नहीं होते हैं पास।
बाधाओं का करें सामना,
होना नहीं कभी उदास।

सत्य की डगर काँटो भरी,
मुश्किल है यहाँ पर चलना।
झूठ, स्वार्थ, लोभ, मोह से,
होता कदम-कदम पर लड़ना।

सत्य की डगर पर चलने वाला,
हार कभी नहीं सकता।
कष्ट बहुत सहने पड़ते,
पर झुक कभी नहीं सकता।

बाधा चाहे कितनी आएँ ,
चलूँ सदा सत्य की राह।
जीत सदा सत्य की होती,
कभी नहीं करता गुमराह।

झूठ, स्वार्थ की छोड़ डगर हम,
सत्य की डगर अपनाएँ।
झूठ, तिमिर सब दूर करे ये,
उजियारा ही चहुँ ओर फैलाएँ।

-कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी,
जिला-गुरुग्राम, हरियाणा

बाल कहानी

गुल्लक ने की मदद

सिमरन और अमन भाई-बहन थे। सिमरन दसवीं और अमन आठवीं कक्षा में पढ़ता था। दोनों मन लगाकर पढ़ते थे। उनके पिताजी भी उन दोनों को पढ़ाई के अलावा अनुशासन एवं शिष्टाचार के नियमों के पालन हेतु प्रेरित करते रहते थे।

उनके पिताजी गाँव में ही सौंदर्य प्रसाधन की छोटी-सी दुकान चलाते थे। गाँव की इकलौती दुकान होने के कारण उनकी दुकान अच्छी चलती थी। कोरोना वायरस के कारण फैली महामारी के कारण देश भर में लॉकडाउन हुआ, तो उनके पिताजी की दुकान भी बंद हो गई। लॉकडाउन की अवधि में उनके पिताजी की जमा पूँजी से घर का खर्च आराम से चल गया। लेकिन लॉकडाउन समाप्त होने के साथ उनकी जमा पूँजी भी खत्म हो गई। अब उन्होंने दुकान खोलना आरंभ कर दिया था। दुकान की बिक्री से होने वाली आय घर के खर्च में चली जाती थी। जिससे न वह बचत कर पा रहे थे और न ही दुकान में बिक्री के लिए नया सामान ला पा रहे थे।

अब दुकान में सामान भी काफी कम हो गया था, जिससे ग्राहक वापस लौटने लगे थे। इन सबसे वह उदास रहने लगे थे। पिताजी को लगातार गुमसुम देखकर एक दिन सिमरन ने उनसे पूछा, क्या बात है पिताजी? आजकल आप कुछ परेशान लगते हैं ।

ऐसा कुछ भी नहीं है, मेरी प्यारी बिटिया। तुम तो बस अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। पिताजी ने हँस कर बात को टालते हुए कहा। लेकिन सिमरन का मन नहीं माना। उसने अपनी माँ से पिताजी की उदासी का कारण पूछा तो उसने सिमरन को सारी बातें बता दीं। यह सब जानकर सिमरन बहुत चिंतित हुई। लेकिन जैसे ही उसे गुल्लक का ध्यान हुआ उसकी उदासी दूर हो गई। पिछले वर्ष मेले में सिमरन ने गुल्लक खरीदी थी। सिमरन के पिताजी दोनों भाई-बहनों को विद्यालय जाते समय कुछ रुपये अपनी इच्छानुसार खर्च करने के लिए देते थे। जिन्हें बचाकर सिमरन गुल्लक में जमा करती थी, जबकि अमन उन रुपयों को खर्च कर देता था। वह अपने कमरे में गई और गुल्लक को तोड़ कर रुपयों को निकाल लिया। सिमरन ने रुपयों को लाकर पिताजी को देते हुए कहा, लीजिए पिताजी। इनसे आप दुकान के लिए सामान लेते आइए। सिमरन के पिताजी को न चाहते हुए भी रुपये लेने पड़े। उनके पास कोई और रास्ता नहीं था। उनकी दुकान पहले की तरह सौंदर्य प्रसाधनों से सज गई थी। अब उनकी दुकान अच्छी चलने लगी थी।

लेकिन अमन इधर कुछ दिनों से उदास दिख रहा था। सिमरन ने अमन की उदासी का कारण पूछ ही लिया। अमन ने उत्तर दिया- दीदी! यदि मैंने भी बचत की होती, तो इस संकट की घड़ी में पिताजी की सहायता कर सकता था। सिमरन ने उसे समझाते हुए कहा- देखो! इसमें दुःखी होने वाली कोई बात नहीं है। बल्कि प्रसन्नता की बात यह है कि तुमने बचत के महत्त्व को समझ लिया।इस बार मेले से हम लोग दो गुल्लक लाएँगे। तुम भी गुल्लक में अपनी इच्छानुसार बचत करना।

हाँ, मैं भी गुल्लक में अपनी पॉकेट-मनी से बचत करूँगा। बचत संकट के समय बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। -अमन ने अपनी सहमति दी।

-कल्याणमय आनंद
सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय निझरा, सोनैली, कटिहार-855114 (बिहार)

नारी शक्ति सँजोए है पीढ़ी दर पीढ़ी की जानकारी

सुनील अरोड़ा

वर्ष 2013 में गर्मियों की छुट्टियों में हैदराबाद जाना हुआ वह भी ट्रेन से। दिल्ली से सुबह 6.00 बजे ट्रेन पकड़ी थी। हमारे कंपार्टमेंट में एक और परिवार भी था। उनमें महिला तो उत्तर भारत की थी पर उसके पति हैदराबाद के मूल निवासी थे, यानी साउथ इंडियन। जल्दी ही हमारी दोस्ती हो गयी। पुरुष का नाम राघवन था और वह दिल्ली में किसी प्राइवेट कंपनी में सेल एग्जेक्युटिव के पद पर था। जब मैंने उनसे पूछा कि उनकी शादी उत्तर भारतीय लड़की से कैसे हुई तो उन्होंने बताया कि हमारी लव मैरिज है। राघवन हैदराबाद के रहने वाले थे तो तेलुगु भाषा पर पूरी पकड़ तो रखते ही थे, साथ ही भाषा के इतिहास के भी अच्छे जानकार भी थे। उन्होंने बताया कि तेलुगु भाषा द्रविड़ भाषा परिवार की एक भाषा है। द्रविड़ भाषा परिवार में 23 भाषाएँ शामिल हैं। फिर बात चल निकली। हम भारतीय कहाँ से आये, हमारा मूल क्या था, तब राघवन जी ने जो जानकारियाँ मुझे दीं तथा कुछ और जानकारियाँ जो मैंने एकत्रित कीं वे आप के सामने पेश हैं-

द्रविड़ भाषा परिवार में 23 भाषाएँ आती हैं जिनमें तेलुगु, मलयालम, तमिल, कन्नड़ प्रमुख हैं। ये भाषाएँ पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती हैं। कुछ विद्वानों द्वारा द्रविड़ भाषाओं को ही भारत की मूल भाषाएँ माना गया है। ऐसा माना जाता है कि इन भाषाओं का जन्म सिंधु घाटी की सभ्यता में हुआ। जब आर्य भारत आये तो द्रविड़ लोग दक्षिण भारत की तरफ चले गए। द्रविड़ लोग ही मूल भारतीय थे और ये लोग ईरान से होते हुए भारत आये थे। ऐसा इसलिए कह सकते है क्योंकि द्रविड़ भाषाओं का चलन आज भी पाकिस्तान के एक भाग में होता है।

भाषा के आधार पर देखें तो हमारी भारतीय यूरोपीय भाषा से बहुत मेल खाती है। इससे ये तर्क तो दिया जा सकता है कि हमारे पूर्वज और यूरोप के पूर्वज कभी साथ रहे होंगे। भारतीयों का एक वर्ग आर्यों के आगमन से जुड़ा हुआ है। परन्तु सिर्फ भाषा के आधार पर हम किसी समुदाय के पूर्वजों का सम्बन्ध नहीं बता सकते। भाषा की बात करें तो कुछ अंग्रेज भारत आये और हम पर दो सौ साल राज किया। हमें अंग्रेज़ी भाषा सिखाई। आज हमारे देश में ब्रिटेन की मूल भाषा अंग्रेज़ी वहाँ के मूल लोगों से लगभग दुगने लोगों द्वारा बोली जाती है। इसलिए विज्ञान ने डीएनए की मदद से पूर्वजों की खोज प्रारंभ की।

जीवों का शरीर कोशिकाओं से बना है। ये कोशिकाएँ अपने में हमारा इतिहास सँजोये है। इस इतिहास में हमारे पूर्वजों की पूरी एक कथा मिलती है। विज्ञान ही इस इतिहास की महाकथा को हमारे सामने लाया। हम जानते है कि जब हम माँ की कोख में थे तब सबसे पहले एक कोशिका बनी थी जो माँ के अंड और पिता के

शुक्राणु के मिलने से बनी थी। यही से भ्रूण में कोशिका विभाजन प्रक्रिया हुई और हमारा पूरा शरीर माँ की कोख में बना। प्रत्येक कोशिका के केन्द्रक में 46 गुणसूत्र उपस्थित होते हैं। 23 माता से आते हैं और 23 पिता से। इसमे लिंगी गुणसूत्र भी होते हैं। मादा में लिंगी गुणसूत्र XX होते हैं और नर में XY गुणसूत्र होते हैं। गुणसूत्रों पर उपस्थित होते हैं जीन। जीन डीएनए के छोटे छोटे खण्ड होते हैं। ये जीन ही हमारे गुणों को निर्धारित करते हैं।

जब मैं बीएड कर रहा था तो हमारे कॉलेज में इंटर कॉलेज डिबेट कम्पटीशन हुआ। डिबेट का टॉपिक था- क्या औरतें अपने शोषण के लिये स्वयं जिम्मेदार हैं। मैंने भी डिबेट में भाग लिया और पक्ष में खड़ा हुआ। डिबेट तो डिबेट ही होती है, विषय का कोई स्पष्ट जवाब तो होता नहीं। अंत में प्रिंसिपल मैम का सम्बोधन हुआ उसमें मुझे एक बात जो अब तक कचोटी है, वह ये कि उन्होंने कहा था कि औरत को भगवान ने शारीरिक रूप से पुरुषों से कमजोर बनाया है। मैं उस समय उनकी इस बात का विरोध नहीं कर सका, क्योंकि माहौल नहीं था। पर बात आज भी कहीं दिल में उठती है। अब इस लेख में नारी शक्ति की बहुत बड़ी वैज्ञानिक खूबी पेश करने जा रहा हूँ, जो यह सिद्ध करेगी कि नारी कहीं कमज़ोर नही है। वह ही हमें बता रही है हमारी जड़ें कहाँ हैं। (वैज्ञानिक दृष्टिकोण)

भ्रूण की कोशिका में केन्द्रक को छोड़कर बाकी उपस्थित सभी कोशिकांग मादा के अंडे से ही आते हैं। कोशिकाँग में एक मुख्य अंग माइटोकांड्रिया होता है जिसका अपना डीएनए होता है। डीएनए अणु की एक खासियत यह है कि यह स्वयं को रेप्लिकेट करके अपने जैसे अणु बनाता है। जो प्रतियाँ बनती है वे एकदम पहली मूल डीएनए से एक दम मिलती हैं। यह प्रक्रिया इतनी सटीक होती है कि गलती की सम्भावना तो शून्य मात्र होती है। फिर भी यदि कोई गलती हो जाती है तो वैज्ञानिक भाषा में उसे उत्परिवर्तन (mutation)कहा जाता है। ये उत्परिवर्तन बहुत कम होते हैं। 10,000 सालों में मात्र 10 उत्परिवर्तन होते हैं। जितने उत्परिवर्तनों की संख्या अधिक होगी उतनी ही विविधता आती है। माता के माइटोकांड्रिया का डीएनए पुत्री में जाता है। तो हम पुत्री के डीएनए से माँ, माँ से नानी, नानी से परनानी इस प्रकार एक समुदाय के मातृ पक्ष के सम्बन्ध के प्रमाण पा सकते है। यहाँ हम यह भी कह सकते है कि मातृ शक्ति ही हमारे पूर्वजों की सम्पूर्ण जानकारी पीढ़ी दर पीढ़ी सँजोये जा रही है।

वैज्ञानिकों ने सारी दुनिया के माइटोकांड्रिया के डीएनए का परीक्षण किया और अफ्रीका के कुछ आदिवासियों में सबसे अधिक विविधता पाई। जो इस बात का प्रमाण था कि यही अफ्रीकी आदिवासी सबसे प्राचीनतम हैं। इस दृष्टि से हम सब लगभग 150,000 वर्ष पूर्व किसी एक अफ्रीकी महिला की संतान हैं।

अफ्रीका से बाहर निकलने के लिए हमारे पूर्वज दक्षिण मार्ग से पूर्वी अफ्रीका के लाल सागर के मुहाने से भारत उपमहाद्वीप आये होंगे या फिर उत्तरी मार्ग से पूर्वी अफ्रीका के लाल सागर के साथ साथ रेगिस्तान को पार करके वापिस भारत की ओर आये होंगे।

वैज्ञानिकों का मानना है कि आज से 50,000 से 80,000 साल पहले अफ्रीका से किसी एक जत्थे ने एशिया की तरफ यात्रा शुरू की होगी और फिर रास्ते में गाँवों के गाँव बसाते हुए कोई जत्था भारत आया होगा। इस प्रकार हमारे पूर्वज अफ्रीका से भारत आये होंगे। यह जानकारी माइटोकांड्रिया के डीएनए अध्ययन से प्राप्त हुई। माइटोकांड्रिया नारी का ही संतान में जाता है।

पीजीटी रसायन विज्ञान
राउवि समलेहरी
जिला-पंचकूला

2020

अक्टूबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 अक्टूबर- विश्व शाकाहारी दिवस
2 अक्टूबर- महात्मा गांधी जयंती
4 अक्टूबर- विश्व पशु कल्याण दिवस
5 अक्टूबर- विश्व शिक्षक दिवस
8 अक्टूबर- भारतीय वायु सेना दिवस
9 अक्तूबर- विश्व डाक दिवस
10 अक्टूबर- विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
11 अक्टूबर- अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस
14 अक्टूबर- विश्व मानक दिवस
15 अक्टूबर- ग्लोबल हैंडवाशिंग डे
17 अक्टूबर- महाराजा अग्रसेन जयंती
16 अक्टूबर- विश्व खाद्य दिवस
24 अक्टूबर- संयुक्त राष्ट्र दिवस
25 अक्टूबर- दशहरा
30 अक्टूबर- ईद-ए-मिलाद

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

School choice in rural India: Perception versus reality

Rahul Lahoti

Rahul Mukhopadhyay

School choice has increased significantly in India – with growth of low-fee private schools – and this is considered important within a market-based approach to schooling. Based on a field study across four states in rural India, this article shows how parents emphasise many educationally unimportant, aspirational factors in their choice, and how their choice of low-fee private schools is often based on inaccurate information.

The expansion of the school system – both public and low-fee private schools (LFPS) – can be said to have opened up more choice for relatively disadvantaged parents to access such schools. In educational debates, on the one hand, this development is lauded as a market mechanism that would ensure purported better functioning private schools weed out inefficient public schools (Shah and Miranda 2013). However, others have drawn attention to how inequalities in the already stratified school system would be enhanced with an unregulated growth of LFPS (Härmä 2011, Srivastava 2007, Ravitch 2010, 2013, OECD (Organisation for Economic Co-operation and Development), 2016).

How parents make school choices for their children

In a recent study conducted by the Azim Premji Foundation, we seek to understand how parents make school choices, what considerations are crucial in choosing a school, and how these factors map to the objective reality of schools (Lahoti and Mukhopadhyay 2019). The three-part field study included the following: (a) a survey of

1,210 families (consisting of 2,464 children) spread across 25 villages in 10 districts across four states (Chhattisgarh, Karnataka, Rajasthan, and Uttarakhand); (b) a 'School Information Tool' administered to the principals and teachers in 121 public and private schools in these sites, along with observations of school processes, to ascertain the match between parental perceptions about schools and the objective reality of education in schools; and (c) semi-structured, qualitative interview schedules to collect data on issues emerging from the quantitative analysis from a sub-sample of respondents comprising 50 parents, 12 headteachers, and 24 teachers.

One block per district was chosen, and most of the blocks are those in which the respective district headquarters is located. The specific site for the study in each block was a delimited geography comprising a set of villages (that is, a group of around 2-3 neighbouring villages) based on pre-specified criteria, including the presence of a balanced mix of public and private schools to ensure diversity in school options (both public and private) for the study.

First, we find that school choice, overall, is complex, with a range of diverse factors being important to different parents. Perceptions of teaching-learning is the most important factor across parents. In addition, many parents also consider discipline and safety as important factors determining their choice. English-medium education is a key consideration for parents who chose private schools, while expenditure is an important factor for parents who chose public schools.

Table 1. Official and actual medium of instruction for children whose parents perceive are studying in English-medium schools (%)

	Official medium of instruction	Actual medium of instruction
Hindi	43	52
Kannada	5	5
English	52	25
Mixed	0	18

Second, in terms of the distribution of preferences between private and public schools in the vicinity, the study finds that parental preferences are not concentrated in specific schools, whether private or public. The most preferred school in the vicinity where parents would like to send their children, across 25 villages, is almost as likely to be a public school as a private school.

The qualitative interviews reinforce the complicated nature of school choice. Among other things, this is revealed in the reconsideration and revision of initial choices made by the parents, and their switching both within (from one private school to another private school) and between school types (from private school to public

school). Some parents are also seen to continue with the already chosen private schools – despite their revalued perceptions of these schools – due to their aspirations for access to cultural capital.

Parental perceptions and school realities

We also compare parental perceptions (from the survey tool) about two specific school attributes – medium of instruction and teacher characteristics – with how these attributes are seen to actually manifest in schools (from the School Information Tool).

For the first attribute, we find that there is a large discrepancy in parental reporting of English as the medium of instruction, the official reporting of English as the medium by schools, and the medium of instruction used in practice in schools. Of the children who attend private schools, 39% are reported as going to English-medium schools by their parents. However, only 22% of the children who go to private schools have English as the official medium of instruction (as reported by school authorities). Further, school observations reveal that the percentage of children going to private schools that actually have English as the medium of instruction is only 10%.

Also, only 25% of parent's perception of English as the medium of instruction in their children's schools matches with reality (Table 1). More than half (57%) of the children who are supposed to be attending English-medium schools are actually studying in the dominant regional language – Hindi or Kannada. Around 18% of these children go to a school that has books in English, but with teachers translating those into the dominant regional language while teaching (categorised as 'Mixed' in Table 1).

For the second attribute, when parental perceptions of teacher characteristics are compared with school-level data of individual teacher characteristics, there is a mismatch between the two for private schools. That is, for private schools, children of parents who identify teacher characteristics as an important attribute – among the top three reasons for their choice of schools – do not necessarily go to schools with better teacher characteristics.

In this analysis parents were grouped into two categories: those who consider teacher characteristics to be important in governing the choice of their children's school, and those who do not consider teacher characteristics to be important. Schools actually chosen by the parents in the first category have lower percentage of academically qualified teachers (76 vs. 87%), lower percentage of teachers with professional qualifications (64 vs. 74%), and lower average experience of teachers (74 vs. 79 months), as compared to the second category (Table 2).

Therefore, the analysis of parental perceptions vis-à-vis school realities shows a huge mismatch between the two in case of LFPS. Though parents report that their children are attending English-medium schools, the reality for most such children is that they are not being taught in English. Similarly, though parents report selecting schools because they care about teacher characteristics, on average they end up picking schools that have lesser qualified teachers than other schools.

The qualitative interviews also offer possible explanations for the mismatch between parental perceptions and school realities. At one end, parental choices of private schools are seen to be strongly determined by aspirational criteria, such as children acquiring a smattering of English and having proper dress and behaviour. In addition, these criteria also reveal a form of 'social distancing' from the poorer families accessing public schools by

Table 2. Teacher characteristics: Parental perceptions vs. school realities

Schools	Parental perceptions	% graduate teachers	% teachers with professional qualifications	Average teacher experience in months
Public	Parents for whom teacher characteristics are important	96	98	169
	Parents for whom teacher characteristics are notimportant	92	98	164
Private	Parents for whom teacher characteristics are important	76	64	74
	Parents for whom teacher characteristics are not important	87	74	79

those parents who send their children to private schools. At the other end, LFPS carry out systematic marketing and image-building efforts for enrolments in neighbouring villages. These marketing efforts highlight the very same criteria parents are seen to aspire for. As a result, visible non-educational quality parameters are reinforced by both parental aspirations for cultural capital and market-oriented practices of private schools.

The findings of the study caution against an uncritical endorsement of market-based policy moves, such as school choice and vouchers. They also challenge the simplistic notion that parental choices are well-informed and always based on the most important educational criteria for assessing schools. Moreover, the study reveals significant mismatches between parental perceptions of specific school characteristics and school realities with reference to those characteristics, for most parents sending their children to private schools.

Are parents misled or simply misinformed about private-school characteristics? Our fieldwork suggests some elements of both are at play. What is visible on one end is the aspiration for cultural capital among parents sending their children to private schools. On the other end, private schools respond to these aspirations through market-based practices. What, therefore, gets emphasised in this mutual interaction are visible but non-educational parameters, which parents seem to conflate with quality of teaching-learning in these schools. Not so visible, but critical parameters of educational quality, such as teacher capacity, get short-changed in the process.

The study provokes the need for a better understanding of the nature of this information asymmetry between educational practices and realities of schools, especially LFPS, and parental perceptions about their educational quality. There is also the need for a more nuanced understanding of parental school choice, mainly in terms of their decision-making process that arguably involves consideration and synthesis of multiple factors based on their constraints, priorities, and available information.

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/school-choice-in-rural-india-perception-versus-reality.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

Azim Premji University
rahul.lahoti@gmail.com

Azim Premji Foundation
rahul.mukhopadhyay@azimpremjifoundation.org

No Child Left Out

Smt. Rupam Jha

Education is our passport to the future, for tomorrow belongs to the people who prepare for it today." –

Eminent Sociologist Max Weber had said that those who all have had equal life chances can be said to have had equality of opportunity. It is unfortunate but true that society is stratified so everyone does not get equal opportunities. Universalisation of education is a step towards equality of opportunity. To achieve this we have to start with the premise that education is a great leveler. Education for all will mean that no child is left out. It is a right and should not be denied to anyone.

A lot of efforts are being undertaken by the government to increase enrolment and reduce the dropout rate. Door to door child mapping is taking place to have a record of out of school children.

Schooling is an important agent of socialization and there is both textual and contextual learning in it. The knowledge bank that is created and the personality development that takes place during this period hold stead for life.

Today we talk of graded learning that is a child can join a class of his or her learning level. Also the aim is to have a primary school within five kilometres radius or better still at walking distance. A lot of effort is being made to increase enrolment and for retention of students already enrolled. There is the midday meal for nutrition and also some grants and scholarships. Today there is talk of giving breakfast too and this practice has been started in tribal areas. These children have to walk a long way to school, at times in hilly tracts, so morning nutrition is important for better concentration in class.

"Learning is a treasure that will follow its owner everywhere." –

Alternative teaching methods make classroom interaction more meaningful. Learners are more attentive if pedagogical inputs are interspersed while teaching. Learning is enhanced if playway method is used.

The root cause of absenteeism can be focused on and this issue can be tackled with by reaching out to the community. Socio-economic factors of the student's family, a lack of awareness among parents, low interest in classroom learning are among the many

reasons for absenteeism.

Today, there is a lot of emphasis on early childhood care, so a child must start pre-primary classes whenever it is the right time and age appropriate. Sustainability in school life is important though this becomes a tad difficult for children of seasonal workers and migratory population. Childhood memories are full of tales of school life and this reflects on another reason as to why school life is important.

A very important reason why schooling is important is as regards the employability factor. All the more reason that no child should be left out. We have heard that in some countries, during school hours no child can loiter around in the streets. This way schooling is ensured and both absenteeism and dropout rate is curbed.

With community outreach, awareness about the schemes for school going children as has been provided by the government can be popularized. This way the parents will be motivated to send students to school. A teacher is a counselor as well and students do talk of their domestic issues and matters related to their peer group with their teacher.

The foundational phase of learning is especially important as nurturing of the young minds begins here. Whatever values are inculcated at this stage stays in the impressionable mind. At this stage delinking from the homestead is the first step. A liking for school life sets in at this nascent stage.

Education Guarantee Scheme is there for students in remote areas. There are so many organisations which have reached the grass root level in order to educate the masses. There are Village Education Committees and Mahila Samakhya group. They are there for school going children as well as for those in the Non Formal Education system.

So study at the right age, slowly and steadily, the right years of schooling when the brain is at its learning best. Learning with peer group teaches you, among other things, the value of healthy competition. Today we talk of peer tutoring as that makes for better learning and also helps in developing leadership qualities. This is possible only within the boundaries of a school environment.

A popular whatsapp message says that school is the longest vacation we had and after that we grew up. Schooling, The Right to Education should be for one and all.

Learn as much as you can while you are young, since life becomes too busy later."

Subject Expert
SCERT Haryana Gurugram

Stay Motivated and Positive during the Corona- Virus Pandemic

"You're a fighter. Look at everything you've overcome. Don't give up now." ***- Olivia Benson***

You are not alone – your beloved ones shall always support you. Corona Virus has impacted people in various ways on an international level. That way it is understandable that society maybe feeling scared and anxious by all the uncertainty with regards to the spread of the virus. We all face a dip in motivation sometimes, but in these exceptional times, staying motivated to train can be extra challenging. So here are some steps to get you back on track.

Focus on improvement- In order for you to achieve your big goals, you need to make a plan and you will want to list all the things you need to improve upon to get these. Work on listing five to six things right now that you would like to improve.

Help others look after your neighbors- You may be part of a low risk group but it may not be the same for your neighbors whose immune systems are compromised by others diseases or age. The act of checking on them (with security distance of course) will make them and also you feel good.

*Watch funny videos/ movies to have a positive mind set.

*Eat nutritious food and keep yourself hydrated.

*Comparing yourself with others is an effective way to demotivate you. Even if you start with enthusiasm, you will soon lose your energy when you compare yourself with others the only competition you have is yourself. Have you become the best you can be?

*If you want to excel in life, self motivation is essential. You must be able to keep your spirits high no matter how discouraging a situation is. Those who

are discouraged in difficult times are certain to lose even before the battle is over.

Take a break- It can be so easy to avoid breaks altogether when you are working from home. Take the time to get up and move away from your desk. Go for a walk, get some fresh air. Breaks like making and eating lunch can recharge you and give you a renewed focus to do better work.

Go outside- We have been advised to stay inside, as much as possible but this doesn't mean we have to be in present in our homes. If you feel a little less productive, go and sit in your garden or take a short walk.

Stay connected- According to studies, loneliness can be as damaging to our health as smoking 15 cigarettes a day, so don't isolate yourself completely. Keep in touch with your family, friends and colleagues via Skype, Face Time, phone calls and texting ------really any form of digital communication. Sadly many people are not able to cope up with this panic situation. So, it becomes important to take care of our mental health during this time. This is a testing time for all of us to survive in this situation, one need to stay motivated.

Focus on positives- It is almost impossible to know exactly what the future looks like! Try not to obsess over things, what will happen next? Instead try to focus your mind on more positive things. Even in the darkest of time, we must try to find a flicker of light at the end of the tunnel.

Summing up- If you are feeling a lack of motivation, be kind to yourself. Understand that this feeling is natural but you need to overcome it soon. I hope the tips discussed in this article will motivate you.

Ms Vinod Kumari
Lecturer in English
DIET Machhrauli, Jhajjar Haryana

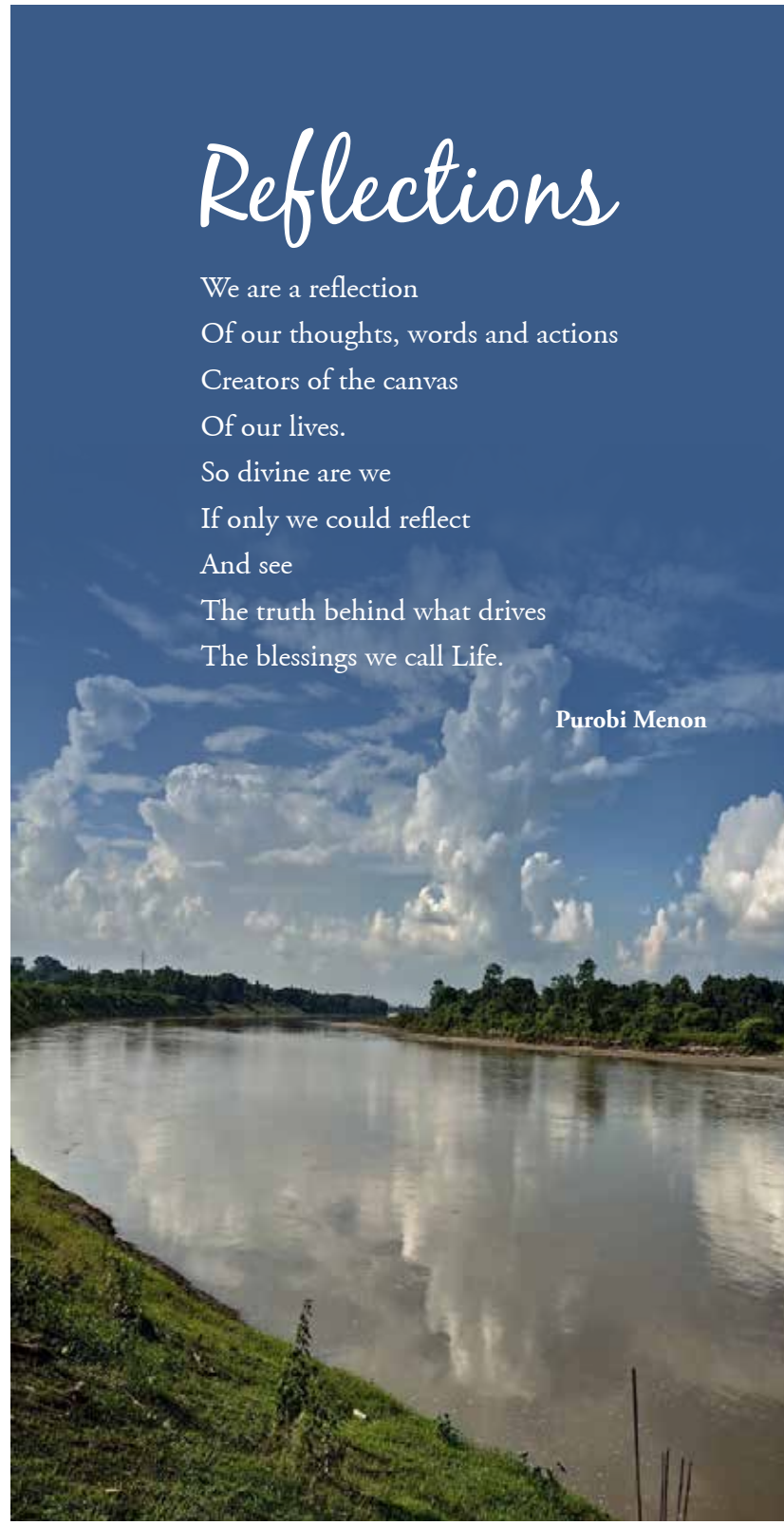

Compendium of Academic Courses After +2

Metallurgy

Introduction

Metallurgy is a field of materials science and of materials engineering that deals with the physical and chemical behaviour of metallic elements and their mixtures called alloys.

Courses

1. Bachelor of Technology (B. Tech.) in Metallurgy and Materials Engineering:
2. Master of Technology (M. Tech.) in Material Science and Engineering:
3. B. E. / B. Tech. or equivalent in Metallurgical/ Materials/ Metallurgy and Materials/ Mechanical/Production/ Ceramics Engineering.

Eligibility

10+2 in Science with Physics, Chemistry and Maths.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology, Roorkee
2. Indian Institute of Technology (BHU), Varanasi.
3. National Institute of Technology, Tiruchirappalli.
4. Indian Institute of Engineering Science and Technology, Shibpur, Howrah, West Bengal.
5. Government College of Engineering, Salem, Tamil Nadu.
6. College of Engineering Pune, Maharashtra.
7. Government Engineering College, Gandhinagar, Gujarat.

METEOROLOGY

Introduction

Meteorology deals in atmospheric studies to know and predict weather and climate. It is the examination of the atmospheric and climate conditions affecting the earth and its population.

Courses

1. B. Tech./B. Sc.
2. M. Tech./M.Sc.
3. Ph. D.

Eligibility

12 with physics and chemistry.

Institutes/Universities

1. Cochin University of Science and Technology, Kerala.

2. Indian Institute of Technology (IIT), Delhi.
3. Andhra University, Vishakhapatnam, Andhra Pradesh.
4. Indian Institute of Technology (IIT) Kharagpur, West Bengal.
5. Shivaji University, Vidyanagar, Maharashtra.

MINING ENGINEERING

Introduction

Mining engineering, also referred as mineral engineering, deals with the study of the techniques to extract and process minerals from their natural surroundings. A mining engineer has to study ore reserve analysis, operations and planning, mine health and safety, drilling, blasting, ventilation and related topics.

Courses

1. BE Mining Engineering
2. B. Tech Mining Engineering
3. Diploma in Mining and Mine Surveying Engineering
4. ME Mining Engineering
5. M. Tech Mining Engineering
6. PG Research Programme on Materials Resource Engineering
7. Ph. D Mining Engineering
8. Postgraduate Diploma in Mineral Engineering

Eligibility

(10+2) biology, maths and chemistry. For IITs, it is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (JEE). The duration of the course is 4 years.

Institutes/Universities

1. IITs
2. Dr. T. Thimmaiah Institute of Technology, Kolar (Karnataka)
3. Anna University College of Engineering, Chennai (Tamil Nadu)
4. Bengal Engineering and Science University, Howrah (West Bengal)
5. Government Engineering College, Bilaspur (Chhattisgarh)
6. Jai Narain Vyas University: Faculty of Engineering and Architecture, Jodhpur (Rajasthan)
7. Maharana Pratap University of Agriculture and Technology: College of Technology and Engineering, Udaipur (Rajasthan)
8. Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, Nagpur (Maharashtra)

NAVAL ARCHITECTURE ENGINEERING

Introduction

The course in Naval Architecture primarily relates to the design, construction or maintenance of all types of marine vessels such as ships, boats, oil and gas tankers, containers, passenger ships, ferries etc.

Courses

BE course, duration: 04 year

Eligibility

(10+2) or equivalent examination with physics, Chemistry, Mathematics and English as separate subjects.

Institutes/Universities

1. Andhra University College of Engineering
2. IIT, Kharagpur
3. IIT, Chennai
4. Kochi University of Science and Technology.
5. Institute of Shipbuilding, Goa

PHYSICAL SCIENCES

Introduction

Physical science is the study of physics and chemistry of nature. It overlaps life sciences in a way to include ecology

and the evidence of historical facts of evolution.

Courses

1. B. Sc / M. sc
2. B. Tech /M. Tech Biological Engineering

Eligibility

10+2 or its equivalent with Mathematics, Physics, Chemistry For IIT's, it is Mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E)

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology, New Delhi
2. Indian Institute of Technology, Madras
3. Indian Institute of Technology, Guwahati
4. Indian Institute of Space Science and Technology, Thiruvananthapuram
5. Indian Institute of Technology, Bombay
6. National Institute of Technology, Calicut
7. Technology Education & Research Integrated Institutions Kurukshetra
8. Guru Gobind Singh Indraprastha University, New Delhi

POLYMER ENGINEERING

Introduction

The course in Polymer (plastics and rubbers) technology deals with materials and the application which ranges from construction, packing, decorative items to automobiles, aircrafts etc.

Courses

1. B.E. Polymer Science and Chemical Technology
2. B.E. Polymer Technology
3. B. Tech Polymer Science and Technology
4. M.E. Polymer Technology
5. M. Tech Polymer Science and Technology
6. Ph. D Polymer Science and Technology

Eligibility

10+2 with biology, maths and chemistry. For IITs, It is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E). The duration of this course is 4 years.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology (IIT), New Delhi
2. Birla Institute of Technology, Mesra, Ranchi
3. Sant Longowal Institute of Engineering and Technology, Sangrur, Punjab
4. Cochin University of Science and Technology (CUSAT), Kochi
5. Maharashtra Institute of Technology (MIT), Pune
6. National Institute of Technology, Calicut
7. Delhi College of Engineering, New Delhi
8. University College of Engineering, Thodupuzha, Kerala
9. VRS & YRN College of Technology, Department of Oil Technology, Chirala, Andhra Pradesh

ROBOTICS

Introduction

Robotics is an inter-disciplinary course and students of mechanical engineering, electrical engineering, instrumentation engineering or computer engineering can join this field. The Robotics and artificial intelligence are interlaced and there is option at the Master's level.

Courses

1. Bachelor of Technology
2. Bachelor of Engineering
3. (In mechanical engineering, electrical engineering, instrumentation engineering or computer engineering)
4. M. Tech in Robotics and M Tech in Artificial Intelligence
5. M. Tech in Robotics Engineering
6. M. Tech in Automation and Robotics
7. Diploma in Robotics

Eligibility

10+2 or equivalent education in Science stream

Institutes/Universities

1. IISC Bangalore
2. University of Hyderabad
3. IIT, Mumbai, Chennai, Kharagpur, Delhi, Kanpur
4. Birla Institute of Technology and Science., Pilani/Mesra
5. National Institute of Technology (NIT), Silchar.

The Blue Blood River

Dr. Deviyani Singh

The Shilpi River was in full spate. The monsoon rains lashed incessantly making the river swell to overflow its banks. But today the concern of the people was not of it flooding their homes but what had just washed ashore on the steps of the bathing Ghats. The body floating face down in slow motion was a ghastly sight. Samarvir , the Chief of Security at Ujjpur, walked up to the riverside, just as the body was being fished out. The officer supervising the operation turned around and saluted his. Samarvir recoiled in horror as the body was turned around and the young face of the heir to the throne was revealed. His slim countenance had now bloated beyond recognition and the amulet around his neck seemed to be choking him. All the rest of his jewels were missing and his bare torso bore marks of sword cuts.

The search parties had been hunting for the crown prince ever since he was reported missing from the palace. A few days back, he had gone for a walk in the extensive palace gardens and never returned. He was a minor and not yet of age to take over the throne. He had no enemies inside the palace where he was protected at all times by his body guards except when he chose to be alone in the palace gardens. It was a mystery as to who could have done such a thing and managed to sneak out of the palace and dispose the body too.

It was left to Samarvir to rack his brains and use all means at his disposal to get to the bottom of this mystery. He yelled to his junior officer - "Wrap the body, take it to the Palace, and be careful not to destroy any evidence."

Although even as the words left his lips he knew it was an exercise in futility, after being so long in the water there would be little evidence of the crime left for him to work upon. Yet everyone depended on him. He would have to find out who dared to do this and yet he had no idea where to begin. Frustration and anger welled up inside his chest like the swollen river. He lifted his face to the rain and let the drops lash his face till it hurt. Whoever did this would pay and he was going to make sure of it. He passed the temple on the Ghats and bowed his head in reverence to the Goddess muttering under his breath a silent prayer for strength and a vow of revenge. His servant came rushing with an umbrella but he brushed him away letting the

rain soak him thoroughly. He got into his carriage his sandals squelching water and ordered the driver to take him back to the Palace.

As he passed the massive gates of the Palace he realized there was no way in which anyone could have sneaked past the guards with a dead body as everything coming in and out of the Palace was checked. They went up the driveway and the carriage rattled on the cobblestone path and before it could reach the main door he gestured to the driver to stop at the Palace garden.

He got off ignoring the slight drizzle and went for another round of the entire garden in order to find any clue as to how the Prince had been murdered or disappeared but it seems he had just vanished into thin air. The gravel from the garden path got into his already wet sandals irritating him even more and he bent down to remove a pebble and tossed it away angrily.

He then went to the infirmary where the body had been kept. The strong smell of spirit assaulted his nostrils.The top physicians had already been called from all of Ujjpur and he spoke to them in a stern voice.

" I know you will say the body is badly decayed but I want you to check every inch of his body and do a thorough autopsy. I want any little evidence that might be available to give me a lead of what happened to the Prince." Samarvir said wiping his head which dripped rain water on to the polished stone floors. The Physicians all nodded in agreement and went about their work cleaning the body and examining the wounds near the heart.

Samarvir went up to this chamber dreading the moment when he would have to break the news to the already ailing King who was so looking forward to his sons coming of age and coronation ceremony. He helped himself to a drink and as the liquid spread like

warm fire down his throat he felt some relief. The rain had stopped now and a white peacock landed on his balcony and cooed loudly. His gaze followed it as it flew down to the gardens. Samarvir could not rest and he went down to search the gardens again till the physicians would come up with something. The peacock had now spread its feathers majestically and began dancing. If he had not been in such a foul mood it was actually a beautiful monsoon evening with the sun setting with an ethereal rainbow in the sky and the peacocks calling to one another in their high pitched shrieks. He followed the peacock down a lesser known path till he came to a marble gazebo surrounded by a green hedge. A glint caught his eye, the rains seemed to have washed some of the mud away and there it was- a polished handle jutting out from beneath the hedge. He bent down to pick it up and was stunned to find a two edged short sword. It still had some dried blood on the tip. He ran with it all the way to the infirmary.

The oldest physicians said, "Chief we have examined the wounds; there were not made by any weapon known to us. It seems to have cuts on both sides simultaneously."

Samarvir held up the sword and everyone gasped, "Something like this?" he was almost shouting with excitement.

"Yes that could be the weapon used to kill the young Prince, and it still has some dried blood on it I see. Where did you find it?"asked the old Physician.

Samarvir could hardly breathe now, "I found it in the garden, but it's not

from the Palace it's a Hun weapon, now how the devil could a Hun have passed the gates and assassinated the young Prince under our very noses? It's just not possible." The Huns were known to have started invading the empire but none of them had been seen so close to Ujjpur.

The old physician nodded and said," But I also have some other news for you, while it may be the same sword which was used to attack the Prince, it's not what killed him. The blade of the weapon did not enter the heart but stopped at the sternum, we found that the bone bore the brunt of the attack and the heart was not damaged by it at all."

Samarvir's brows shot up into his head,"No, then what killed him? Did his heart fail as he was attacked? Was he choked with his jewelry as the pulled it off him?"

"No indeed we have found traces of poison in the Princes intestines. A slow moving poison which takes time, and could have affected him an hour after he had his meal and went for a stroll in the garden."

Samarvir's elation at having found the murder weapon was short lived and he now began to follow a different track to trace how the Prince had been murdered. It was obviously an inside job. A shoddy job at best, a poor attempt to make it look like a robbery and attack from outside by a Hun. He began to think of how the body could have been disposed of into the river without crossing the gates. He went up to the roof of the palace and began pacing up and down. The sun had set now and his gaze went to the tower that overlooked the river. That's it; he thought to himself and ran all the way up the spiral staircase. It was a steep climb and he was panting when he reached the minaret on top. He looked down at the river and imagined how someone could have flung the body from there in the night. It would take a lot of effort and a very strong man to do it though as the river was not that close by. He walked back down the steps slowly, looking around and on a jagged stone of the staircase he found a single golden silken thread. He wrapped his fingers around it. Indeed it was a thread of the finest silk worn only by the royal family. It had probably snagged on a rough stone edge as the Prince's body was carried or dragged up the stairs.

At night Samarvir went to the Kings chamber and informed him of the terrible tragedy. He had asked no one else to inform the King as he wanted to do it himself and be able to tell him how he would avenge that dastardly act. The King coughed up bloody sputum and sat up in his bed. The aging Monarch took Samarvir's hand in his own shaking hands, the thin skin and blue veins clearly visible.

He said, "Samarvir , you are like my own son, I want you to find the cowards responsible for this so I can punish them before I die."

Samarvir nodded, his eyes welling up with tears. He helped the King to lie down again and returned to his chambers. He lay in bed staring at the ceiling the whole night getting up only for water to quench his parched throat. He was waiting for the first light of dawn. He went down to the courtyard and summoned the Prince's body guards. He singled out tow of the strongest ones and began cross questioning them. At the slightest hesitation he cracked his whip of nine tails at them shouting, "I will have each of you

flogged publically till death if I don't get the truth out of you." The guards all cowered at his fury.

Samarvir came upon an interesting fact; one of the big built guard's wives was a cook in the Prince's kitchen. He left the guards questioning midway and ran up to the royal kitchens. The cooks were startled to see him.

"Who oversaw the Princes food? Where is the guard's wife?"

The male cook stammered,"Sh--she left for her village a few days back to help her ailing Mother."

Samarvir's suspicion was fully confirmed now, "Get out of the kitchen all of you, now!" he thundered.

He began to conduct a search. Just then he saw a black cat peering at him. It was the Prince's pet cat. He shooed her away but she kept following him rubbing up against his legs and purring. The dam cat can probably still smell the Princes blood on me he thought, talk about cats having a sixth sense. He stamped his feet to get the cat out of his way and she leapt on to the top most shelf and tipped over a jar of pickle making a mess on the floor. Samarvir looked up and to his surprise found a small green vial hidden behind the pickle jar. He opened the lid and sniffed it. He took it to the infirmary and it was confirmed that it was the same poison which was found in the Princes body.

Samarvir now lined up all the cooks and cracked his whip. But again his lead seemed to have hit a dead end. The cooks all admitted to knowing about the poison and they said that it was a daily practice to add a tiny amount of poison to the Princes food in order to make him immune in case any of his enemies tried to poison him.

But Samarvir asked them who had administered more than the normal dose but it was not clear. Samarvir im-

mediately got on his horse and rode down for a whole day till he reached the village of the guards' wife's home. He did not trust anyone now, not even his carriage driver as he did not want anyone to warn her or tamper with any evidence he might chance upon. He burst into the small cottage and saw the cook sitting next to her frail mother on a charpoy.

She was startled to see him and folded her hands immediately and started trembling. Samarvir spat out at her. "Miserable woman, tell me everything or I shall behead you right here in front of your Mother." He could not control his anger and was trembling too as he held his sword to her neck. She did not speak but just kept wailing loudly for forgiveness.

Samarvir's eyes went to the shelf cut out in the mud hut and he was surprised to see expensive medicines from the Royal Physician himself. He let the cook fall to the ground and grabbed the medicines. "Oh so you have been enjoying royal privileges as well I see. Now tell me at once who asked you to poison the Prince or I shall throw all these medicines away and your Mother will die."

The cook blurted out that it was the Kings youngest wife who wanted her son to be the next King after the old king died. She had forced her and her husband to plot the murder. In return they had got bags of gold and lifesaving medicines for her dying mother. The royal physician was also involved in planning the murder. The cook fell at Samarvir's feet and pleaded to be spared; he kicked her away and headed back to the Palace. By the time he reached back the next day the King had died peacefully in his sleep and the coronation ceremony of the underage Prince was being held.

Samarvir walked in and stopped the Priests from continuing with the ceremony and told his unbelievable tale. The youngest Queen and Royal Physician were placed under arrest and taken away in chains, finally to be executed alongwith the bodyguard and his wife the cook.

The young Prince was coroneted but the elder Queen was made the Regent to hold all powers till he came of age. The youngest queen got her wish at last but at what cost. Samarvir could not get himself to kill or arrest an innocent child for the sins of his Mother and anyways he was the only legal heir to the throne left. Thus History wrote the story of the youngest Prince that day, but with the blood of his ancestors and the river of blue blood flowed on.

Disclaimer: This story is a work of fiction and a product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons or events is purely coincidental.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

VOCABULARY ENRICHMENT ACTIVITIES

Without grammar, we can use a little English but without vocabulary we can use nothing.

Vocabulary is the first and foremost requirement for a language . A secondary student must be equipped with at least a 3000 to 5000 word stock to have a good command over English Language. Every teacher and the student must be acquainted with new words used in their text . They should know the meaning and usage of the word he or she comes across while reading text.

ACTIVITY 1.
INTRODUCTION SESSION:

While having Introduction of the students , a teacher should adopt the following activity .

1 TELL YOUR NAME WITH AN ADJECTIVE BEFORE YOUR NAME.

FOR EXAMPLE: The teacher should give an example of how to introduce yourself . He or she will give an example by introducing himself or herself.

I am smart Surender Kumar.

The teacher asks the students to introduce themselves using at least one adjective before their names.

STUDENT 1 – My name is nice Aman.

STUDENT 2- My name is brave Nikita.

STUDENT 3- My name is beautiful poonam.

STUDENT 4- I am intelligent Ankit.

And so on …..

When all the students would have give their introduction one by one.

The teachers will give them a restriction.

- Introduce yourself by using an adjective before your names beginning with the same letter of your own name.

The teacher will give an example …..

I am systematic Surender.

Now the students will search relevant adjectives and start introducing themselves.

STUDENT 1 – I am attractive Aman.

STUDENT 2- I am nice Nikita.

STUDENT 3- I am patriotic Poonam.

STUDEN 4- My name is active Ankit.

In this way the teacher will complete the session of introduction.

ASSIGNMENT FOR THE STUDENTS

Learning outcomes. Speaking skills, Use of adjectives, relevance of adjectives, increase in vocabulary.

1 . Make the list of adjectives used by all the students in the class and use them in your daily life.

2. Write the names of your family members using atleast 2 suitable adjectives before their names.

ACTIVITY 2

Make words as many as you can from the given letters and use them in your own sentences.

1 . Divide the class into small groups

2 . Give them cut outs of letters.

3. Ask them to make meaningful words and note down in their note books.

4. Give them time limit ie 20 min.

5 . Ask the group leaders to present their words in front of the whole class.

6 . Jot down their words on the black board and note their respective scores.

7. Declare the winner group .

8 . Assign the vocabulary as homework.

Peer group interaction is the best method to teach and learn vocabulary and other skills. There can be a number of activities to be adopted in the class.

I have gone through many such activities and got wonderful results.

I got 100% board results in English through peer group interaction technique.

Surender Kumar
Lecturer in English
GSSS Kairu – Bhiwani

Amazing Facts

1. **Penguins can jump as high as 6 feet in the air.**
2. Men are four times more likely to be struck by lightning than women.
3. The longest acceptance speech in the history of the Oscars was by Greer Garson in 1942. She received an Oscar for Best Actress for the movie Mrs. Miniver, and her speech was five minutes and 30 seconds long.
4. Only one person in two billion will live to be 116 or older.
5. Octopi change colours when they become frightened. Normally they are a brownish colour, but can change to green or blue when fear sets in.
6. A "gelotologist" is a person who studies laughter.
7. The deepest underwater penguin dive is 1,772 feet by an Emperor Penguin.
8. When a predator is chasing an impala, a type of antelope, it runs in a zig zag formation jumping as high as three metres.
9. David Rice Atchinson was President of the United States for exactly one day. This happened due to a glitch in American law at the time.
10. To make one glass of orange juice, 50 glasses of water are needed to grow enough oranges to make the juice.
11. Tomatina is the legendary Spanish tomato-throwing festival held in Bunol, Spain.
12. Pigs have no sweat glands, which is why they stay in water or mud to keep cool.
13. There is no element on Mendeleev's (the current) periodic table of elements abbreviated, either partially, or fully, with the letter J.
14. The microwave was invented after a researcher walked by a radar tube and a chocolate bar melted in his pocket.
15. In February 1878, the first telephone book was published in New Haven, Connecticut. The book was one page long and had fifty names in it.
16. Only President to win a Pulitzer: John F. Kennedy for "Profiles in Courage".
17. The largest volcano known is on Mars: Olympus Mons, 370 miles wide and 79,000 feet high, is almost three times higher than Mount Everest.
18. Mexican jumping beans jump because of moth larvae inside the bean.
19. Women blink nearly twice as much as men.
20. Dentists have recommended that a toothbrush be kept at least 6 feet away from a toilet to avoid airborne particles resulting from the flush.

www.greatfacts.com/

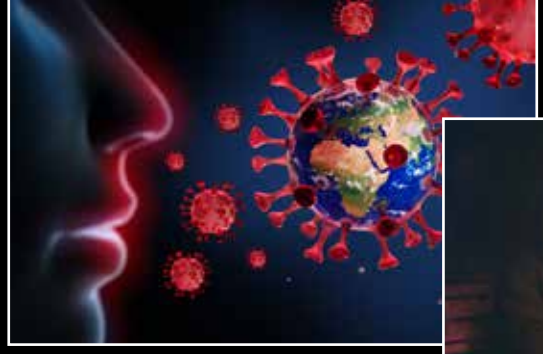

General Knowledge

1. How many degrees is each angle in an equilateral triangle? **Sixty**
2. What railway line is green on the traditional map of the London Underground (Tube)? **District Line**
3. Keflavik International Airport is in which country? **Iceland**
4. A dibber (or dibble) is used in what: gardening; bingo; brain surgery; or boating? **Gardening**
5. Japanese Haiku poetry is generally said to contain how many lines and how many syllables when presented in English? **Three lines and seventeen syllables**
6. Cambridge Late Pine, Redgauntlet and Elsanta are varieties of what fruit? **Strawberry**
7. Who wrote the lines, "Tyger! Tyger! burning bright, In the forests of the night..." ? **William Blake**
8. What word, meaning 'crown' in Latin, refers to a visible electrical discharge and a planetary halo? **Corona**
9. Before 'Poppy Appeal' what words appeared on the central black buttons of poppies sold in Poppy Appeal in the UK every year? **Haig Fund**
10. In the 2010 Formula One motor racing season how many points are awarded to the winning driver of a Grand Prix? **25**
11. What title was shared by three different songs which achieved UK or US number one positions within a few months of each other during 1984-85? **The Power of Love**
12. Who first published and popularised the stories Snow White, Cinderella, Rumpelstiltskin, Rapunzel, Sleeping Beauty and Red Riding Hood? **The Brothers Grimm**
13. What creature is a pismire? **Ant**
14. What is the square root of two-hundred and eighty-nine? **Seventeen**
15. Yukon and Nunavut are Federal Territories of which country? **Canada**
16. What is the traditional name for a spot on a domino? **Pip**
17. What word for a wild or half-tamed horse derives from the Spanish word for rough wood and specifically a knot in wood? **Bronco**
18. ICO - the UK agency responsible for data protection, privacy and freedom of information - stands for what? **Information Commissioner's Office**
19. Eyjafjallajokull is what: a Norwegian football club; an Alaskan horse; a disease of the feet; or Iceland's volcano responsible for the air-traffic paralysing ash cloud? **Iceland's volcano responsible for the air-traffic paralysing ash cloud**
20. Which footballer scored all of England's five goals in their 1975 5-0 defeat of Cyprus? **Malcolm MacDonald**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-65-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ने का अवसर मिला। नई शिक्षा नीति पर केंद्रित इस अंक में शिक्षा नीति से संबंधित सभी जानकारियाँ सार रूप में प्रदान की गई थीं। अरुण कुमार कैहरबा ने अपने लेख 'बाल्यावस्था देखभाल एवं प्रारंभिक शिक्षा को लेकर हुए महत्त्वपूर्ण प्रावधानों को बखूबी चित्रित किया। विभाग की उपनिदेशक इंद्रा बेनीवाल ने स्पष्ट किया कि यह शिक्षा नीति सचमुच जनाकांक्षाओं के अनुरूप बनी है। डॉ. प्रदीप राठौर के लेख 'बुक बैंक बनवाकर बचा लिए नन्ही आँखों के सतरंगी ख्वाब' पढ़कर जानकारी मिली कि अंबाला जिले में विभाग के संयुक्त निदेशक सतिंद्र सिवाच की प्रेरणा एवं प्रयासों से 'बुक बैंक' स्थापना की मुहिम चल रही है। कितना अच्छा हो कि यह मुहिम पूरे प्रदेश में चलाई जाए। इसके अलावा 'दीक्षाः ऑनलाइन मंच', 'शिक्षक की पाती' और 'जीने की कला' आदि रचनाएँ भी बहुत पसंद आईं। मेरे विद्यालय की मेधावी छात्रा पर केंद्रित मेरे लेख को भी पत्रिका में स्थान दिया गया। इसके लिए संपादक मंडल का आभार।

जितेंद्र राठौड़
प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
आरोही राजकीय विद्यालय, रामगढ़ पांडवा
जिला- कैथल, हरियाणा

आदरणीय संपादक जी,

हरियाणा शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका 'शिक्षा सारथी' का सितम्बर, 2020 का अंक मेल पर मिला, जिसे देखकर खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं आरम्भ से ही विभागीय पत्रिका का नियमित पाठक रहा हूँ और साथ ही पत्रिका का कवि/लेखक भी रहा हूँ। पहले पत्रिका डाक द्वारा मेरे स्कूल में आती थी, फिर ऑनलाइन बनने के कारण आनी बन्द हो गयी, तो डाउनलोड करने लगा, लेकिन आज मेरी खुद की मेल पर मेरी मनपसंद पत्रिका को पाकर मन बाग-बाग हो उठा। पत्रिका हमेशा की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय है। 'शिक्षा सारथी' के सम्पादक मण्डल का पत्रिका भेजने के लिये हार्दिक आभार। मेरी सलाह है कि हर स्कूल की मेल पर पत्रिका को भेजा जाए तो और भी बेहतर रहेगा। पुनः हार्दिक आभार।

भूपसिंह भारती
शिक्षक
रामा विद्यालय, डेरोली अहीर
जिला- महेंद्रगढ़, हरियाणा

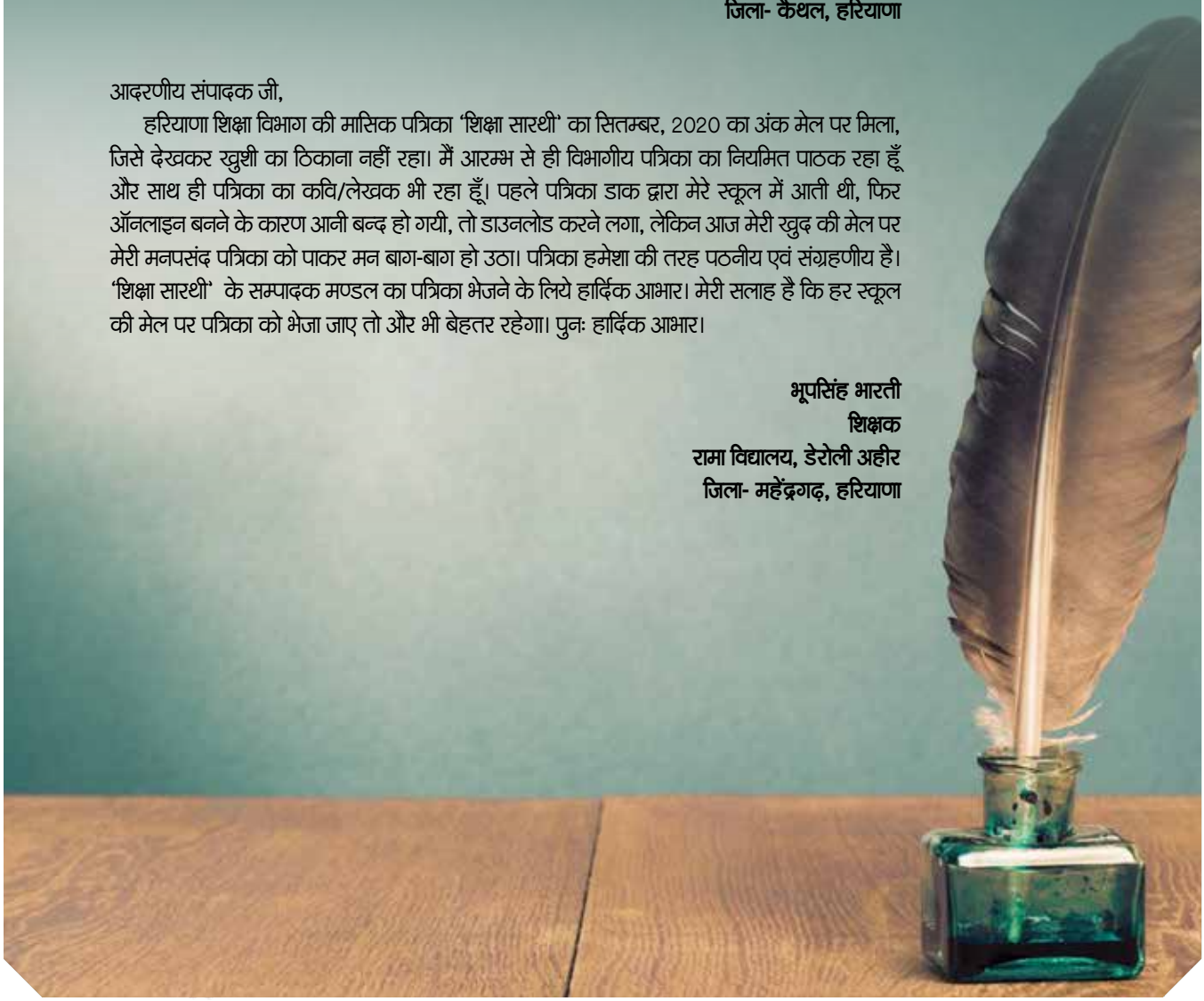

ऑनलाइन शिक्षण

मोबाइल का हो सदुपयोग, यह समझाना ज़रूरी है।
ऑनलाइन शिक्षण प्रयोग सबको बतलाना ज़रूरी है।
कोरोना से जो बदले हालात, हिम्मत से बनेगी बात।
शिक्षा की करो शुरुआत, जुड़े रहो शिक्षामित्र के साथ।
अध्यापक आते स्कूल, विद्यार्थी का घर रहना मजबूरी है।
हालात जैसे भी हों, पर पढ़ना पढ़ाना बहुत ज़रूरी है।
ऑनलाइन शिक्षण प्रयोग सबको बतलाना ज़रूरी है।।

आज के काम को कल पर मत छोड़ो, आज ही करो पूरा।
लिखो, समझो, याद-स्मरण करो, कहीं अभ्यास रहे न अधूरा ।
नियमबद्धता से काम करो, जब तक आपस की यह दूरी है।
कहाँ से बच कर चलना ,कहाँ जाना जो बहुत ज़रूरी है।
ऑनलाइन शिक्षण प्रयोग सबको बतलाना ज़रूरी है।।

माना चॉक बोर्ड से पढ़ने-पढ़ाने वाली बात नहीं रही अब।
प्रार्थना, योग, खेल, मिलने-जुलने वाली हालत नहीं अब।
पर यह सब ऑनलाइन करवा कर, कर रहे कमी पूरी हैं।
जो करते हो ऑनलाइन परिश्रम, वह नजर आना ज़रूरी है।
ऑनलाइन शिक्षण प्रयोग सबको बतलाना ज़रूरी है।।

मासिक परीक्षा और प्रतियोगिताएँ, ऑनलाइन हो रहे सारे।
घर से पढ़ाओ कार्यक्रम से, सब विषयों का ज्ञान बढ़ा रे।
हर शनिवार क्विज़ करवा रहे, न कोई कक्षा अधूरी है।
कोरोना से बचाव हेतु सामाजिक दूरी व मास्क ज़रूरी है।
ऑनलाइन शिक्षण प्रयोग सबको बतलाना ज़रूरी है।।

खुद भी रास्ते बनाने होंगे, सब के सब छोड़ने बहाने होंगे।
छू लेंगे सफलता की बुलंदियाँ, बीते हुए बुरे दिन पुराने होंगे।
जो आते हैं विद्यार्थी, उनका शंका समाधान करना ज़रूरी है।
बलवान शास्त्री आज जो दिल में आया, शब्दों से बखान ज़रूरी है।
ऑनलाइन शिक्षण प्रयोग सबको बतलाना ज़रूरी है।।

बलवान
संस्कृत अध्यापक
रावमा विद्यालय सजूमा (कैथल)

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर...

2 से 17 अक्तूबर, 2020

हम सब का एक ही नारा
साफ-सुथरा हो हरियाणा हमारा

कूड़े को छांटे, उसे हरे और नीले कूड़ेदान में डालें।

स्वच्छता को अपनाना है, गन्दगी को दूर भगाना है

गन्दगी न फैलायें। कूड़ा-करकट कूड़ेदान में ही डालें तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें।

हरा कूड़ादान (गीला कूड़ा)

- ✓ प्राकृतिक तरीके से सड़नशील (नमीयुक्त कूड़ा)
- ✓ सभी तरह के खाद्य अवशेष (पके और अनपके)
- ✓ फलों के अवशेष
- ✓ सब्जियों के अवशेष
- ✓ फूलों के अवशेष
- ✓ मांसाहारी खाने के अवशेष
- ✓ अंडे के छिलके
- ✓ बगीचों से निकला हुआ कूड़ा

नीला कूड़ादान (सूखा कूड़ा)

प्राकृतिक रूप से नष्ट न होने वाले और रीसाइकल करने योग्य सूखे हुए कूड़े

- ✓ कागज
- ✓ प्लास्टिक के सामान
- ✓ पॉलिथीन
- ✓ कांच के बर्तन
- ✓ चमड़े का सामान
- ✓ गत्ते का सामान
- ✓ सामान पैक करने की सामग्री
- ✓ स्टील, अन्य धातु
- ✓ चिथड़े
- ✓ रबड़ से बने सामान
- ✓ लकड़ी के सामान
- ✓ बल्ब और ट्यूबलाइट

पार्क, विद्यालय, अस्पताल, सरकारी संस्थाओं व सार्वजनिक स्थल पर सफाई रखें व गन्दगी न फैलायें उन्हें साफ व स्वच्छ रखें ।

सही ढंग से कूड़े का निपटारा मेरा कर्त्तव्य

स्वच्छ पर्यावरण मेरा जन्मसिद्ध अधिकार